... दर्शन

प्राचीन जीवन



जुलाई १९४०] # देश-दर्शन [आषाढ़ १९९७

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष २] [संख्या १

प्राचीन-जीवन

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs 6/-
This copy As. 8/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ॥)

विषय-सूची

देश-दर्शन के प्रथम वर्ष के अंक

लंका, इराक, पेलेस्टाइन, बरमा, पोलैण्ड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र १, मिस्र २, फिनलैण्ड, बेल्जियम, और रूमानिया। प्रत्येक भाग मूल्य छः आना बारह अंक एक साथ लेने पर ४) रु० बी० पी० से चार आने अधिक।

प्राचीन आर्य्य

भारतवर्ष में प्राचीन आर्य-सभ्यता का विकास सिन्ध या सिन्धु नदी की घाटी में हुआ। यहां से यह सभ्यता दूर दूर तक फैली। पुराने समय के दूसरे देशों में बसे हुये लोग अपने देश का ज़िकर (उल्लेख) सिन्धु नाम से करते थे। इसी से बिगड़ कर इंड और हिन्द बना जिस से अपने देश को हिन्दुस्तान कहते हैं। सिन्ध प्रान्त के मोहन-जो-दड़ो और पंजाब के हरप्पा के भीटों की खुदाई में इतनी पुरानी और ऐसी ऊँची सभ्यता का पता लगा कि दुनिया के लोग दंग रह गये। भीतर गड़े हुये घर अच्छी ईंटों के बने थे। इनमें पत्थर का भी काम था। संगमरमर पर धातु की टोपी पहने हुये एक मनुष्य का चित्र बना था। हाथी दांत की मुहरों (छापों) पर सांड़, गैंडा, कुत्ता और मुर्गे के चित्र मिले। इन मुहरों पर ब्रह्मी लिपि से भी अधिक पुरानी लिपि के अक्षर लिखे हैं। ऐसा जान पड़ता है कि संस्कृत के अक्षर इसी के आधार पर बने हैं।

इस खुदाई में सोने, चाँदी, ताँबे जवाहिरात आदि सभी तरह के ज़ेवर मिले। लोहे को छोड़ कर प्रायः सभी धातु यहाँ मिली हैं। ताँबे की चीजों में एक छाया-

दार दो पहिये की गाड़ी का नमूना मिला है। मिट्टी के बर्तन कई तरह के मिले हैं। एक घड़े में गेहूँ निकले। मिट्टी के बर्तनों पर बढ़िया चित्रकारी और रंगाई का काम था। हमारे पूर्वज आर्य लोग किस तरह का जीवन बिताते थे इस का पता कई और बातों से लगा है।

प्राचीन आर्य बड़े धर्मपरायण थे। वे वेद-मन्त्रों द्वारा ईश्वर की उपासना किया करते थे। पश्चिमोत्तर प्रान्त के रहने वाले आर्य गान्धार कहलाते थे। वे भेड़ पालते थे। पहाड़ पर रहने वाले मूजवद् कहलाते थे। पञ्चजनों में पुरू, तुर्वश, यदु, अनुद्रुह्य आदि कई वर्ग शामिल थे। पुरू लोग सरस्वती के दोनों किनारों पर रहते थे। इन्हीं ने सिकन्दर से लोहा लिया था। मत्स्य लोग यमुना नदी के किनारे पर रहते थे। उशीनर भारत-वर्ष के मध्य भाग में रहते थे। पांचाल लोग हस्तिनापुर के समीप रहते थे। यहीं कुरू लोग रहते थे। चेदि लोग पहले मगध के समीप रहते थे।

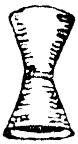
आर्य लोग प्रायः नदी तट, पहाड़ी ढाल अथवा बन के बीच में ऊँचे और स्वच्छ स्थानों पर रहते थे। आरम्भ में प्रत्येक आर्य सिपाही किसान और पुरोहित होता था। कुटुम्ब का सब से बड़ा पुरुष नेता बनता था। शत्रु अथवा जल के उपद्रव के समय वे ऊँचे स्थान पर किले भी बनाते थे। इन्हीं दुर्गों का नाम 'पुर' था।

पहले वे बड़े बड़े नगरों में रहना पसन्द नहीं करते थे। आरम्भ में घर प्रायः सब कहीं लकड़ी के बनते थे।

कुल-विकास के बाद राजा की आवश्यकता जान पड़ी। युद्ध के समय राजा सब से आगे रहता था। वह बड़ा वीर होता था। साधारण लोगों से वह युद्ध-कला-शारीरिक बल और साहस में कहीं अधिक आगे होता था। युद्ध के न होने पर वह धर्मपूर्वक शासन करता था और शान्ति रखता था। किसी किसी राजा को प्रजा ने स्वयम् चुना है। प्रायः राजा वंश-परम्परा से होते थे। पहले युद्ध के समय राजा का यज्ञ-हवन कराने का काम पुरोहित करते थे। इन्हें गौ, स्वर्ण, रथ, घोड़ा वस्त्र आदि पदार्थ दान दिये थे। आगे चल कर पुरोहित भी वंश परम्परा से होने लगे।

आगे चलकर काम बटने लगा। जो लोग पढ़ने पढ़ाने, यज्ञ करने कराने और ईश्वर चिन्तन में ही अपना समय बिताने लगे वे ब्राह्मण कहलाने लगे। जो लोग युद्ध में घाव (क्षत) सह कर और मर मिट कर देश के दूसरे लोगों की रक्षा करना अपना धर्म समझने लगे वे क्षत्री कहलाने लगे। कृषि, गोपालन, व्यापार आदि कामों में लगे हुए और देश का धन बढ़ाने वाले लोग वैश्य कहलाने लगे। अपने शरीर और हस्तकला से दूसरों की सेवा करने वाले शूद्र कहलाने लगे। इन्हें वेद

पढ़ने पढ़ाने का समय नहीं मिलता था। लेकिन लुहार, चमार, सुनार, राज आदि कारीगरों का बड़ा मान होता था।



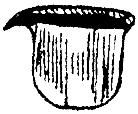
उलूखलम्
(ओखली)



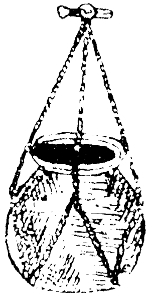
मूसल

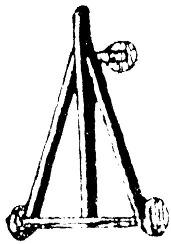


श्रवा



दोहनपात्रम्



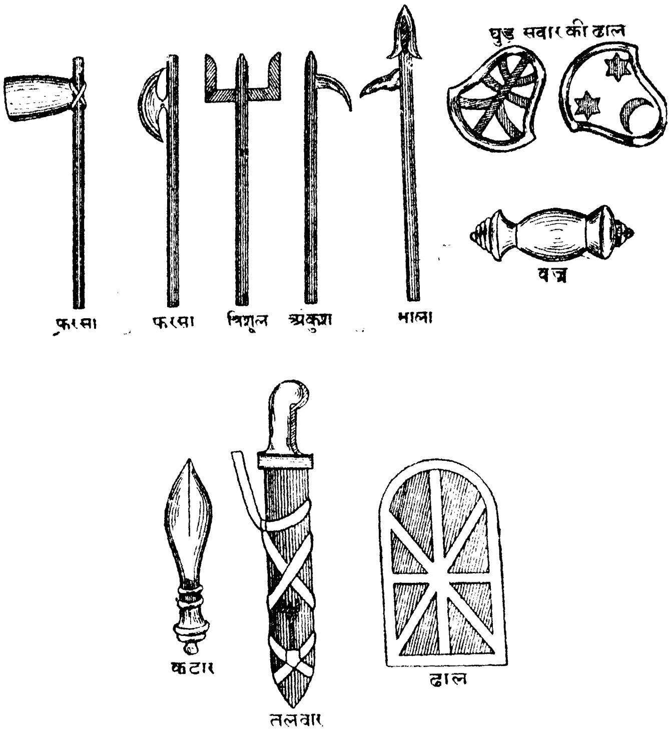


शकटः (गाड़ी)

सांय दोहनकुम्भी (सिकहर)

आर्य लोग बड़ा ही सात्विक जीवन बिताते थे। चोरी, व्यभिचार आदि दुष्कर्मों से वे कोसों दूर रहते थे। खुली हवा और प्रकाश में प्राकृतिक जीवन बिताने के कारण वे हृष्ट पुष्ट और दीर्घायु होते थे। औसत से वे १०० वर्ष तक जीते थे। इस १०० वर्ष के जीवन को

उन्होंने चार भागों या आश्रमों में बाँट रक्खा था। पहला आश्रम ब्रह्मचर्य कहलाता था। इसमें २५ वर्ष की उम्र तक ब्रह्मचारी लोग गुरु के साथ रह कर विद्या-



भारतवर्ष के कुछ प्राचीन अस्त्र-शस्त्र

ग्रहण करते थे। इस आश्रम में ग़रीब-अमीर का कोई भेद नहीं रहता था। आचार्य विद्यार्थियों या उनके

माता-पिता से किसी तरह की फीस नहीं लेता था। उन दिनों विद्यार्थी नौकरी का लक्ष्य करके नहीं पढ़ते थे। न उनके ऊपर परीक्षाओं का भूत सवार रहता था। वे ज्ञान प्राप्ति और आदर्श और सफल जीवन बनाने के लिये गुरु के पास विद्या ग्रहण करने के लिये जाते थे। २५ वर्ष के बाद भी कुछ विद्यार्थी ब्रह्मचारी रह कर विद्योपार्जन में ही आनन्द मनाते थे। अधिकतर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करते थे।

विवाह का क्रम कुछ कुछ आजकल का ही था। कन्या के घर पर अधिक धूमधाम होती थी। कन्या भी ब्रह्मचर्य व्रत पूरा करके वर की इच्छा करती थी। कहीं कहीं कन्या स्वयं पति को चुनती थी। वैसे कई और प्रकार के विवाह प्रचलित थे।

उस समय गृहस्थाश्रम भी धर्माचरण के लिये होता था। अनुकूल सन्तान पैदा करने और सन्तान को गृह-कार्य सौंपने के बाद ५० वर्ष के उपरान्त गृहस्थ लोग घर को छोड़ कर वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करते थे। यह आश्रम स्वाध्याय, तप और परोपकार के लिये होता था। ७५ वर्ष के बाद सन्यास आश्रम आरम्भ होता था। संसार के बन्धनों से दूर रह कर संन्यासी अपना समय ईश्वर चिन्तन में ही बिताता था।

आर्य लोग वस्त्र ओढ़ते थे, वे प्रायः ऊन के बने हुए रहते थे। छींट का भी प्रचार था। ज़रीदार वस्त्र भी थे।

ऋग्वेद काल में कटक, कुण्डल, ग्रैवेय, नूपुर आदि भेद से अनेक आभूषणों का प्रचार था।

केशपाश सधा हुआ होता था। सुगन्धित द्रव्यों से युक्त होता था। अथर्ववेद में शतदती और कङ्कतिका नाम की दो औषधियों का नाम आता है। उसके प्रयोग से केश बढ़ते थे। वसिष्ठगोत्रीय आर्य अपने केशों को समेट कर गाँठ बाँध कर दाहिनी ओर लटकाये रखते थे। स्त्रियाँ जटारूप में और पुरुष गाँठ बाँध कर केश रखते थे। रुद्र और पूषा नामक केश के बाँधने के प्रकारों की प्रशंसा भी देखी गयी है। उत्सवों में मालाएँ पहनी जाती थीं। वैदिक भारतीय डाढ़ी रखते थे, विरला ही कोई मुण्डाता था। अथर्ववेद में सोमराजा के मुण्डन के समय में वायु उष्णजल लाया, सविता ने चतुरता से क्षुर चलाया आदि प्रसङ्ग आये हैं।

दुग्ध ही प्रधान आहार था। धारोष्ण (स्तन से तुरन्त निकला हुआ कुछ गरम और ताज़ा दूध) दुग्ध भी पीते थे। अन्न को दुग्ध में पका कर खाते थे। कभी सोमरस में मिला कर पीते थे। घृत इतना प्रिय था कि देवताओं के लिये भी इसी प्रिय वस्तु की

आहुति दी जाती थी। भुने हुए धान्यों को पत्थरों में पीस कर उसके पूये बना कर अथवा उसको घृत या दुग्ध के साथ खाते थे। विविध धान्य और फलों पर उनका निर्वाह होता था। पशुमांस प्रायः यज्ञों में ही खाया जाता था, अन्यत्र नहीं।

पकाने के पात्र लोहे के अथवा मिट्टी के होते थे। पीने के पात्र लकड़ी के बनाये जाते थे।

वैदिक भारतीय दो प्रकार की सुराओं को जानते थे। एक सोम जो कि यज्ञक्रिया में ही काम में लाया जाता था। जब सोम दुर्लभ हुआ तो दूसरी सुरा चल पड़ी। आजकल जिस प्रकार चावलों से सुरा बनाई जाती है पहले वह धान्यों से बनाई जाती थी। द्यूत के कारण ही लोग सुरा में प्रवृत्त होते थे। किसी ऋषि ने क्रोध, द्यूत और सुरा को पाप का घर बतलाया है।

ऋग्वेदकालिक आर्यों का युद्ध ही प्रधान कर्म था। वे पैदल या रथ पर चढ़ कर युद्ध करते थे। शरीर पर कवच और सिर पर शिरस्त्राण बाँधते थे। घोड़ों पर थोड़ा थोड़ा चढ़ना जानते थे, अश्वसैन्य की सृष्टि पश्चात् हुई। उनके प्रधान आयुध थे धनुष और बाण। बाण विषमुख अथवा लोहमुख होते थे। कुठारादि का भी प्रयोग करते थे। कुछ पैदल सिपाही बैठ कर पैर की

सहायता से बाण चलाते थे। सिकन्दर के युद्ध समय में हिन्दुस्तानी इतने तेज़ बाण छोड़ते थे कि वे लोह कवच को तोड़ कर यूनानियों की छाती में घुस जाते थे।

गोरक्षा ही आर्यों की जीविका का प्रधान साधन था। गोवंशवृद्धि में ही उनकी प्रबल इच्छा रहती थी। इसी लिये क्षेमादि प्रार्थना-मन्त्रों में गोधन के लिये विशेष प्रार्थना है। वे केवल गोपालक ही नहीं प्रत्युत कृषीवल अर्थात् कृषक भी थे। वे मृगया-व्यसनी भी थे। मृगया धनुष तथा बाण के आश्रय से होती थी। हरिणों का वागुरा (कूटयन्त्र) से, पक्षियों को विस्तीर्ण जाल से, सिंहों को पाश से, शूकर को शिकारी कुक्कुरों से पकड़ते थे।

नौका काष्ठ की होती थी। डण्डों से चलाई जाती थी, नदी तरण का साधनमात्र थी।

वाणिज्य होता था वस्तुविनिमय (चीज़ों की अदल-बदल) से, क्योंकि गोधन ही उनका प्रधान धन था। पहले 'निष्क' शब्द कण्ठभूषण का वाचक था पीछे से सिक्के का वाचक हुआ।

ऋग्वेदकाल में बढ़ई थे। उनके तक्षक, योजक, रथकार इस प्रकार तीन भेद थे। लुहार भी थे। गृहोपयोगी लोहे के पात्र बनाते थे। उस समय में चर्मकार भी

थे। स्त्रियाँ या तो सीती थीं अथवा चटाइयाँ बुनती थीं। वस्त्र बुनना भी जानती थीं। बुनने का प्रकार ऋग्वेद में नहीं मिलता। अथर्ववेद में अधिक स्पष्ट है। शुक्ल यजुर्वेद के समय विशेष कर्मविभाग हुआ, उसमें रज्जु-कार, रत्नकार, हस्तिपक (फीलवान), नर्तक (नट), आदि का निर्देश है।

उद्योगशील समरप्रिय वैदिक आर्यों को रथकेलि या रथक्रीड़ा में आनन्द आता था। द्यूतक्रीड़ा भी मनोरंजन का साधन था। द्यूत की निन्दा भी खूब आई है। तीसरा मनोरंजन था नर्तन। इसमें स्त्रियाँ विशेष रूप से भाग लेती थीं। कभी कभी पुरुष भी भाग लेते थे। नर्तन सब के समक्ष होता था और आनन्दोल्लास का साधन माना जाता था। आर्यों में संगीत विद्या भी उन्नतावस्था में थी। ऋग्वेद में डण्डों से बजाये जाने वाली दुन्दुभि, मुख से बजाये जाने वाला बाण नामक वाद्य, वीणा आदि तन्त्रीवाद्य का स्पष्ट वर्णन है। चतु-रंग (शतरंज) का खेल भी खेला जाता था।

प्राचीन मिस्री

अब से ८००० वर्ष पहले मिस्र देश में बड़े विचित्र लोग रहते थे। पुराने लोग मिट गये। फिर सदियों तक उनके रहन सहन का किसी को पता न चला। लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले फ्रान्स के वीर लड़ाका नेपोलियन ने मिस्र देश पर चढ़ाई की। कई चतुर लोग भी उसके साथ हो लिये। वे मिस्र देश के पुराने पत्थरों और मक-बरों को ध्यान से देखते जाते थे। रोज़ेटा नगर में इन्हें एक अजब तरह का पत्थर मिला। इस पत्थर पर एक पुराने राजा का आदेश (हुक्म) तीन लिपियों (अक्षरों) में खुदा था। मिस्र देश के सबसे प्राचीन चित्र-लिपि (तस्वीरी या हेरोग्लिफिक) के साथ वही बात वहाँ की लोक-लिपि (डेमोटिक) और यूनानी (ग्रीक) लिपि में खुदी थी। यूनानी (ग्रीक) समझने वाले योरुप में बहुत से लोग थे। इस से मिस्र देश की सब से पुरानी चित्र लिपि और भाषा की कुंजी मिल गई। धीरे धीरे विद्वानों ने प्राचीन मिस्री भाषा का पूरा कोष और व्याकरण तयार कर लिया। फिर वहाँ के प्राचीन शिला-लेखों के पढ़ने में बड़ी आसानी हो गई। इस तरह मिस्र देश के पुराने रहने वालों का हाल सब को मालूम हो गया।

मिस्र देश के सब से पुराने लोग एक जगह घर बनाकर नहीं रहते थे। वे भेड़, बकरी, गाय, बैल, ऊँट और गधे पालते थे। इन्हीं जानवरों को चराते हुये वे सदा भटकते रहते थे। मिस्र देश में नील नदी के किनारे उन्हें बड़ी उपजाऊ ज़मीन मिली। यहाँ उनके पीने और जानवरों को पिलाने के लिये बहुत अच्छा पानी था। यह देश उन्हें बहुत अच्छा लगा और वे यहीं ठहर गये। नील नदी हर साल अपनी बाढ़ के साथ उपजाऊ कीचड़ लाती है। कुछ ही समय में मिस्री लोगों ने यहाँ अनाज उगाना सीख लिया। वे बीजों को कुछ गीली मिट्टी में बखेर देते थे। फिर वे अपने जानवरों से मिट्टी को कुचलवा कर बीजों को ज़मीन के भीतर कर देते थे। मिस्र देश की तेज़ धूप में गेहूँ और जौ की फसल बड़ी अच्छी होती थी। इस तरह गेहूँ और जौ की फसल उगाने में उनका बहुत सा समय बीतने लगा।

धीरे धीरे वे मटर, सेम, प्याज़, मूली और दूसरी तरकारियाँ भी उगाने लगे। उन्होंने छुहारे, अंजीर और अनार के पेड़ लगाये इससे उन्हें खाने के लिये फल मिलने लगे। फसल तरकारी और फल वाले पेड़ों को सींचने में उन्हें सब से अधिक मेहनत करनी पड़ती थी। मिस्र देश में तेज़ धूप पड़ती है। वर्षा शायद ही कभी होती है। सौभाग्य से नील नदी में हर साल

जून से अक्तूबर महीने तक बाढ़ आती है। अधिक दक्षिण की ओर जिन झीलों से नील नदी निकलती है उधर ज़ोर की वर्षा होती है और झीलें उमड़ पड़ती हैं।

इसी बाढ़ के पानी से अपने खेतों और बगीचों को सींचने के लिये मिस्री लोगों ने तरह तरह के उपाय ढूँढ़ निकाले। नदी से दूर के खेतों तक बाढ़ का पानी पहुँचाने के लिये उन्होंने गहरी खाइयाँ और नालियाँ खोदीं। कुछ होशियार लोगों ने बांध बनाये और नहरें निकालीं। बाढ़ घट जाने पर वे नदी का पानी ढेंकली से ऊपर खींचने लगे। ढेंकली बनाने के लिये खजूर का तना बड़ा अच्छा रहता था। नील की मिट्टी से वे पानी खींचने और भरने के लिये तरह तरह के बर्तन बनाना सीख गये। पानी मिलने से उपजाऊ ज़मीन में उनके खेत और बग़ीचे सदा लहलहाते रहते थे।

नील नदी के पानी में तरह तरह की मछलियाँ बहुत थीं। किनारे के दलदलों में नरकुल बहुत उगते थे। इनमें बहुत सी चिड़ियां बसेरा लेती थीं। कुछ मिस्री लोग मछलियों और चिड़ियों का शिकार करते थे। फिर भी अधिकतर लोग खेती करते थे। खेती के काम में लगे रहने से उन्हें घुमक्कड़ जीवन छोड़ना पड़ा। उन्हें अपने खेत के पास स्थायी घर बनाकर रहने की आवश्य-

कता हुई। फिर भी उन्होंने अपने पहले घर नदी के किनारे उगने वाले नरकुलों से डेरों की सूरत के ही बनाये। कुछ ही समय में वे नील की मिट्टी से अच्छे घर बनाने लगे। कुछ लोग मिट्टी से कच्ची ईंटें पाथते थे। तेज़ धूप में वे जल्द सूख जाती थीं। वे अपने घरों को खजूर की लकड़ी (धन्नी) से पाटते थे।

प्राचीन मिस्री लोग इस (दुनिया के) जीवन को क्षणिक मानते थे। उनका विश्वास था कि स्थायी जीवन दूसरी दुनिया में है। इस लिये वे अपने रहने के लिये साधारण घर बनाते थे। लेकिन वे देव-मन्दिर बहुत बढ़िया बनाते थे। मन्दिरों में कई देवताओं की पूजा होती थी। पूजा करने का काम पुजारी लोग किया करते थे। पुजारियों का बड़ा आदर होता था।

जब मिस्री लोग जंगली जानवरों का शिकार करते और ढोर चराते थे तब वे जानवरों की खाल से अपने शरीर को ढाँकते थे। लेकिन जब वे एक जगह बस कर खेती करने लगे तब उन्होंने कपड़ा बुनना सीख लिया। वे अपने खेतों में पटसन उगाते थे। इसी के रेशों से वे तरह तरह के कपड़े बनाते थे। मिस्र देश में खूब गरमी पड़ती है। इस लिये लोग अधिक कपड़ा नहीं पहनते थे। ऊनी कपड़ों की उन्हें जरूरत ही नहीं पड़ती थी। मिस्री लोग शान्ति के बड़े प्रेमी थे। वे आपस में बहुत

कम लड़ते थे। नील नदी के पूर्व और पश्चिम की ओर रेगिस्तान था। यह रेगिस्तान उन्हें शत्रुओं से बचाता था। रेगिस्तान को पार करके कोई इन पर अचानक हमला नहीं कर सकता था। लेकिन रेगिस्तान के बीच बीच में नखलिस्तान थे। इनमें कुछ घुमक्कड़ लोग डेरा डालते और अपने जानवरों को ठहराते थे। घुमक्कड़ लोग खाने पीने के लिये तंग थे। वे देखते थे कि मिस्री लोग अच्छा भोजन करते हैं और अच्छे कपड़े पहनते हैं। इसलिये वे मिस्री लोगों से जलते थे। मिस्री लोग उन्हें आसानी से भगा देते थे। आरम्भ में मिस्री लोग लकड़ी और पत्थर का भाला चलाते थे। फिर उन्होंने तांबे के भाले बनाये। कुछ समय बीतने पर उन्होंने तांबे को कड़ा करने के लिये उसमें टीन मिलाई और कांसे के मज़बूत हथियार बनाये। खेती से फुरसत पाने पर वे अपनी स्त्रियों को सजाने के लिये तांबे की मालायें और दूसरे आभूषण बनाने लगे।

लोगों के मालदार होने से उनका राजा और भी अधिक धनी हो गया। मिस्र देश का राजा फराऊन (फेरो) कहलाता था। वह एक सुन्दर महल में रहता था। उसका महल बगीचों से घिरा हुआ था। वह मेम्फीस शहर में रहता था। कुछ लोगों का अनुमान है कि मेम्फीस दुनिया भर में सब से अधिक पुराना शहर

था। यहीं बड़े बड़े मन्दिर और दूसरे आलीशान नगर थे। मन्दिर तो राजमहल से भी अधिक सुन्दर बने थे। महल में कई अहाते थे। एक के बाद दूसरे में जाना होता था। इनकी चपटी छतों पर सुन्दर चित्रकारी थी। छतें नीली रंगी थीं। इनके बीच बीच में सुनहरे तारें चमकते थे। ऐसा मालूम होता था कि यह छतें आकाश के ही टुकड़े हैं। छतें विशाल खम्भों पर सधी हुई थीं। इन खम्भों पर सुन्दर चित्रकारी थी। इन्हें इस ढंग से रंगा गया था कि वे नील नदी में उगने वाले कमल की पँखुड़ियों के समान सुन्दर दिखाई देते थे। महलों की दीवारों और फर्श पर भी बढ़िया रंगाई की गई थी।

अवकाश रहने और धन बढ़ने से लोगों को लिखने पढ़ने की आवश्यकता जान पड़ी। राजा लोग चाहते थे कि उनके आदेश सब लोगों को मालूम हों। उनकी वीरता के काम आगे भी लोगों को याद रहें। पुजारी लोग देवताओं की स्तुति, उनकी गाथायें और उत्सव की तिथियां याद रखना चाहते थे। किसान अपने खेतों की नाप और दुकानदार अपने हिसाब किताब को ठीक ठीक जानना चाहते थे। कुछ ही समय में मिस्री लोगों ने लिखने का ढंग ढूँढ़ निकाला।

मिस्री लोगों के अक्षर हमारी देवनागरी की तरह न थे। वे तस्वीर (चित्र) बनाकर लिखते थे। जो

कुछ वे लिखना चाहते थे उसके लिये वे छोटी छोटी तस्वीरें खींच देते थे। पशु-पक्षी और दूसरे सुन्दर चित्रों से भरी हुई पुराने मिस्री लोगों की पुस्तकें बड़ी अच्छी लगती थीं। मिस्री लोग नील में उगने वाले पेपिरस पर लिखते थे। इसी से अँग्रेजी का पेपर शब्द बना है। यह कुछ कुछ हमारे भोज पत्र के समान था। आरम्भ में लोगों को थोड़ी बातें लिखनी पड़ी। उनके लिये चित्र काफी थे। आगे चलकर मिस्री लोग नई नई खोज करने लगे। उनका ज्ञान बढ़ा। इससे चित्रों की कमी पड़ने लगी। इस लिये उन्होंने चित्रों के बदले शब्दों और उनके अंगों के लिये संकेत (इशारे) नियत कर लिये इस प्रकार मिस्र देश में चित्रलिपि के बाद संकेत-लिपि फैलने लगी। पर लिखने में बड़ी होशियारी दिखलानी पड़ती थी। सब लोग लिख नहीं सकते थे। लिखने का काम विशेष लेखक चतुर करते थे। राजा के यहाँ बहुत से लेखकों की आवश्यकता पड़ती थी। लेखक लोग नरकुल की कलम से लिखते थे। कुछ होशियार कारीगर (पत्थर गढ़ने वाले) पत्थर पर गढ़कर लेख खोद देते थे। वास्तव में इन्हीं शिला-लेखों से प्राचीन मिस्र देश का परिचय मिला है। मिस्र देश का नाम दूर दूर तक फैलने लगा। सौदागर लोग फेरो (फराउन) के दरबार में तरह तरह की चीज़ें बेचने के

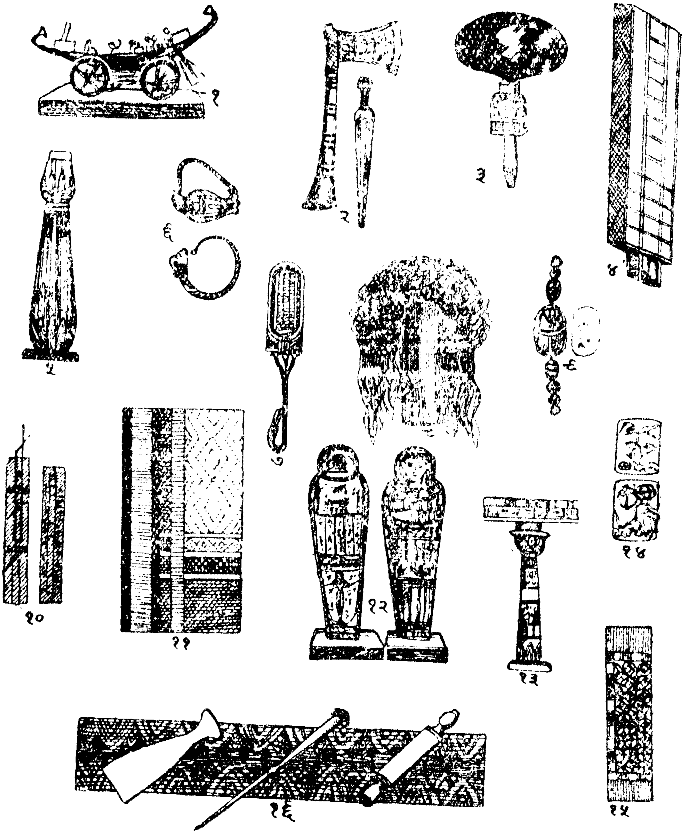
उपाय सोचने लगे । उन दिनों एक दो सौदागर रेगिस्तान के लम्बे रास्ते को पार नहीं कर सकते थे।



एक प्राचीन मिस्री

रास्ते में लुट जाने का डर था। इसलिये कई सौ सौदागर मिल कर फरात की घाटी से मिस्र देश को आते थे। वे अपना सामान ऊँटों पर लादते थे। ऊँटों की क़तार (पंक्ति) बड़ी लम्बी होती थी। इस तरह के सौदागरों के झुंड को काफला या कारवां कहते हैं। वह सौदागर मसाला, लोबान मिर और गुलाम बेचने के लिये लाते थे। बदले में वे मिस्र देश से सुन्दर मलमल, हाथीदांत और दूसरी चीज़ें ले जाते थे।

मिस्री लोग कुछ चीज़ों को स्वयं दूर दूर से लाते थे। वे नाव बनाना और चलाना सीख गये थे। उन्होंने कुछ ऐसी बड़ी बड़ी नावें (जहाज़) बनाईं जो लाल सागर में चलती थीं। उनकी एक रानी हतासू ने इस तरह के पाँच जहाज़ बनवाये। मिस्री नावें बड़ी लम्बी लेकिन तंग (कम चौड़ी) होती थीं। उनमें बादबान भी लगते थे। लेकिन वे पतवारों (डाँड़ों) से चलाई जाती



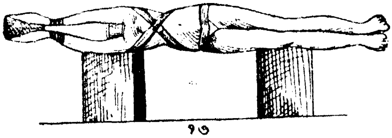
१—ठोस सोने की बनी हुई प्राचीन मिस्री नाव। खेने वाले चांदी के बने हैं। २—लड़ाई का फरसा और कटार। ३—दर्पण (शीशा)। ४—डाफ (पासा) खेलने का बक्स। ५—पेपिरस के आकार का एक स्तम्भ। ६—कान की बाली। ७—शृंगार का पात्र। ८—एक प्राचीन मिस्री स्त्री के बनावटी केश। ९—कंठी (माला)। १०—मिस्री चित्रकारों की। ११—दीवार की चित्रकारी रंग मिलाने के तख्ते। १२—ममी केस मसाला लगी हुई न सड़ने वाली लाश के आवरण (ढक्कन)। १३—स्तम्भ। १४—मुहर। १५—दीवार की प्राचीन चित्रकारी। १६—प्राचीन मिस्री लोग इन्हीं सीधे सादे यन्त्रों से लाश पर ऐसा मसाला लगाते थे कि फिर वह कभी नहीं सड़ती थी। इसे ही ममी कहते हैं।

थीं। मिस्री नावें अफ्रीका के किनारे चलती चलती उस भाग में पहुँचीं जहाँ काले हब्शी रहते थे। हब्शी लोगों ने मिस्र देश के बने हुए भाले, आभूषण (मालायें) कुल्हाड़े बहुत पसन्द किये। हब्शी लोग इन चीज़ों को नहीं बना सकते थे। इसलिये हब्शी लोग हाथीदाँत, आबनूस, सोना, सुगन्ध वाली लकड़ी, बन्दर और सिंह-चर्म देकर मिस्र देश की चीज़ें मोल लेते थे।

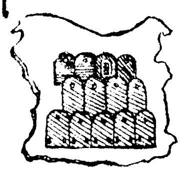
पहली समुद्र-यात्रा से मिस्र देश की रानी बड़ी प्रसन्न हुई। उसने इसकी यादगार में थीबीस नगर में एक नया मन्दिर बनवाया। मन्दिर की दो दीवारों पर इस यात्रा की कथा पत्थरों के ऊपर चित्रों में खुदी हुई है।

कुछ मिस्री जहाज़ उत्तर की ओर चले और भूमध्य सागर के क्रीट द्वीप तक पहुँचे। यहाँ उन्होंने एक बड़ा आलीशान नगर देखा। घर पत्थर के बने थे। यहाँ के जहाज़ मिस्री जहाज़ों से अधिक अच्छे और बड़े थे। मिस्र देश में केवल खजूर की लकड़ी होती थी।

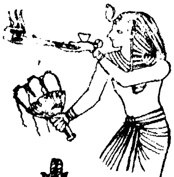
मिस्री लोग प्लास्टर, मिट्टी, धातु और लकड़ी की बड़ी सुन्दर मूर्तियाँ बनाते थे। इनकी बनी हुई मूर्तियों में जीवन भरा हुआ था। देवताओं की मूर्तियों का शरीर मनुष्य का और सिर जानवर का होता था। कुछ मूर्तियाँ



१७



१८



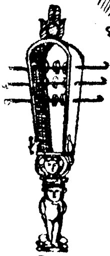
१९







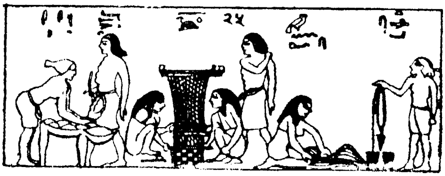
२२



२३



२४





२६

१७—अँगूठी रखने की एक सुन्दर तश्तरी। १८—कवच (शरीर की रक्षा करने वाले वस्त्र) का एक टुकड़ा। १९—पुजारी लोबान जलाकर आरती कर रहा है। २०—प्राचीन मिस्री लोगों की एक मंडली का सम्मेलन। २१—अंगूठी। २२—अंगूठी। २३—इसीस देवता की पूजा का एक पात्र। २४—श्रृंगार का एक पात्र। २५—अपने निरीक्षकों की देख भाल में स्त्रियाँ कपड़ा बुन और धो रही हैं। २६—मिस्र की प्रसिद्ध रानी क्लियोपेट्रा।

छोटी, कुछ साधारण और कुछ पहाड़ की तरह ऊँची होती थीं।

मिस्री लोग रंग के कुछ गोरे और साधारण कद के होते थे। पुजारी अक्सर सिर मुड़ाते थे। मुँडे हुए सिर के ऊपर वे घूँघरदार ढीला कंटोप पहनते थे। आगे चल कर कुछ लोग साफा पहनने लगे। स्त्रियाँ सोने चाँदी के मूल्यवान और सुन्दर आभूषण पहनती थीं। यहाँ के राजा ने सोने की एक बड़ी नाव बनवाई थी। डाँड़ चलाने वाली १२ मूर्तियाँ चाँदी की बनी थीं। नाव पहियों पर रक्खी हुई थीं।

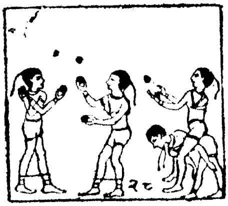
मिस्री लोग बहुत से देवताओं को मानते थे। कुछ देवताओं के नाम यह हैं :—

रा, होरस, ओसिरीस, इसीस, त्मू, आमेन और सेत। इनमें रा सर्व प्रधान देव था। कुछ लोग आमेन को बड़ा मानते थे। आगे चल कर दोनों एक नाम से पुकारे जाने लगे। दोनों को आमेन-रा कहते थे। ग्राम-देवों और इष्टदेवों की अधिकता होने पर भी आमेन-रा मिस्र देश का सर्व प्रधान देव था। कई देव पशु और पक्षी के आकार के माने जाते थे।

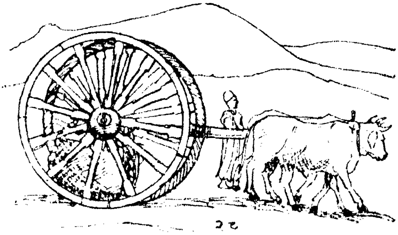
मिस्री लोगों के पुजारी पवित्रता का बड़ा ध्यान रखते थे। वे दिन में दो बार और रात्रि को दो बार



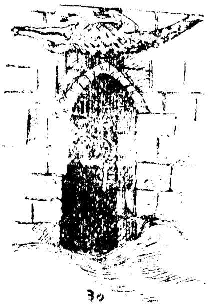
२७—मिस्री लोगों के गोड़ने, जोतने और हँसिया से खेत काटने का ढंग।

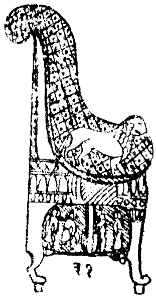


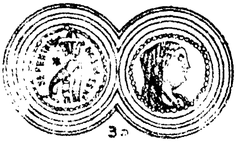
२८—गेंद का खेल।



२९—बैलगाड़ी।







३२—सिक्के।

३०—मगर से सुशोभित एक पुराना मिस्री द्वार।

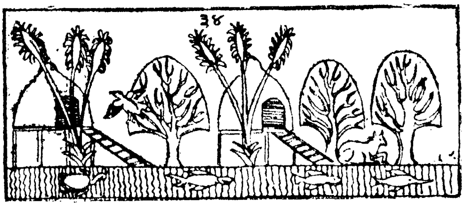
३१—रामसेस के मकबरे में पाई गई एक आराम कुरसी।

ठंडे पानी से स्नान करते थे और हर बार धुला हुआ मलमल का कपड़ा पहनते थे। वे हर तीसरे दिन शरीर के सभी अंगों के बाल इस डर से मुँड़ा डालते थे कि कहीं उनके जूँ न हो जावे। वे मछली खाना निषिद्ध मानते थे लेकिन पशु और पक्षियों का मांस खाते थे। शराब भी पीते थे। वे दाल नहीं खाते थे। उसे वे अपवित्र मानते थे। वे साँड़ को पवित्र मानते थे और उसे वे अपने इष्टदेव इवाफस को बलि चढ़ाते थे। लेकिन जिस साँड़ के एक भी काला दाग़ होता था वह अपवित्र गिना जाता था। दाग वाले जानवर की बलि चढ़ाने वालों को प्राण-दंड दिया जाता था। शुद्ध पशु के माथे और सींगों पर टीका लगाया जाता था। वेदी पर पहले आग जलाई जाती थी और ईश्वर से प्रार्थना की जाती थी। अग्नि में शराब की आहुति चढ़ाने के बाद पशु का सिर काट लिया जाता था। वे प्रार्थना करते थे कि उनके ऊपर या मिस्र देश के ऊपर आने वाली आपत्ति उसी सिर के ऊपर चली जावे। इसी से कोई मिस्री बलि-पशु के सिर का मांस कभी नहीं खाता था। उसे वे यूनानी व्यापारियों के हाथ बेंच देते थे अथवा नील नदी में फेंक देते थे।

मिस्री लोग सुअर को अपवित्र मानते थे और सुअर के छू जाने पर कपड़े समेत नदी में स्नान करते थे।



३३—मिस्री लोगों की एक संगीत मंडली।



३४—प्राचीन झोपड़े।



३५—स्त्री पुरुष।



३६—विशाल स्तम्भों का भवन।

सुअर पालने वाले लोग मिस्र देश में घृणा की दृष्टि से देखे जाते थे। केवल बेकस (काम) और लूना (चन्द्र) दो देवताओं को सुअर की बलि चढ़ाई जाती थी।

पुजारी लोग संयम से जीवन बिताते थे और विधि-पूर्वक मन्दिरों में पूजा करते थे। इसके बदले में उन्हें विशेष अधिकार और सम्पत्ति मिली हुई थी।

मिस्री लोगों में कुछ विलक्षण बातें थीं। वे पैरों से आटा माड़ते थे और हाथ से गोबर और मैला उठाते थे। घर में मृत्यु हो जाने पर वे बाल नहीं बनवाते थे। और अवसरों पर बाल मुँड़ाये रहते थे। मिस्री लोग गेहूँ और जौ को तुच्छ भोजन समझते थे। वे एक प्रकार की मकड़ी को अधिक आदर से देखते थे। मिस्री लोग अपने लड़कों का खतना कराते थे। पुरुष दो और स्त्रियाँ एक बंडी पहनती थीं। मिस्री लोग दाहिनी ओर से बाईं ओर को लिखते थे। वे धार्मिक विषयों को एक लिपि (चित्र) से लिखते थे और साधारण विषयों को दूसरी लिपि से लिखते थे।

प्राचीन मिस्रियों के खेल

प्राचीन मिस्री लोग तरह तरह के खेल खेलते थे। चौपड़ का खेल उन्हें इतना प्रिय था कि इस खेल का सामान मुर्दे के साथ परलोक में खेलने के लिये गाड़ दिया जाता था। लड़कियाँ गुड़िया और लड़के गेंद से तरह तरह के खेल खेलते थे। गेंद का खेल सभी उम्र के लोग खेलते थे। गेंद का बीच वाला भाग ६ अंगुल चौड़ा होता था। गेंद चमड़े की बनी होती थी और डोरे से सी जाती थी। कुछ लोग फंदे और कांटे (हुक) का खेल खेलते थे। जो लोग कांटे से अपने विरोधी का फंदा खींच लेते थे उनकी जीत होती थी। एक खेल नोकदार हथियार से लकड़ी के लट्ठे पर खेला जाता था। लट्ठे के बीच में एक छोटा गोल निशान बना रहता था। जो मनुष्य सब से अधिक बार नुकीली लकड़ी से बेध देता था उसकी जीत होती थी।

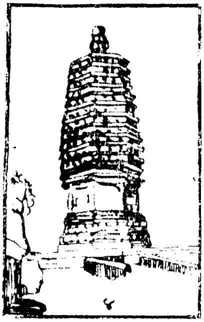
पहलवान कुश्ती लड़ा करते थे। कुश्ती लड़ने से पहले वे शरीर में तेल मलते थे और लड़ते समय वे केवल एक चमड़े का छोटा लँगोट पहनते थे। कुछ लोग भारी बोझा और बालू के थैले उठाने की कसरत करते थे। बोझा एक हाथ से उठाया जाता था। बोझा उठाते समय हाथ सीधा रक्खा जाता था। बोझा सिर की

सीध में अधिक से अधिक समय तक रक्खा जाता था। कुछ लोग नाव चला कर दिल बहलाते थे। गदा या पटा चलाने का खेल भी मिस्री लोगों को बहुत अच्छा लगता था। बांये हाथ को बचाने के लिये वे लकड़ी का एक तख्ता बांध लेते थे। कभी कभी मनोविनोद के लिये मिस्री लोग साँड़ों की लड़ाई देखा करते थे। इनके अतिरिक्त प्राचीन मिस्री लोग और कई तरह के खेल खेलते थे। इन खेलों और कसरतों के केवल पुराने चित्र मिलते हैं। उनके खेलने का ढंग नहीं बतलाया गया है।

चीनी

चीनी अत्यन्त प्राचीन लोग हैं। समय समय पर दूसरी जातियों ने चीन पर हमला किया। कुछ ने थोड़े समय के लिये चीन को हरा भी दिया। फिर भी चीनियों ने अपने विजेताओं को हजम कर लिया। इसी से कहा जाता है कि चीन एक विशाल समुद्र है। इसमें गिरने वाली सभी नदियां खारी हो जाती हैं। आरम्भ में चीनी लोग भी घुमक्कड़ जीवन बिताते थे और डेरों में रहते थे। फिर उनका प्रथम राजा यूचाओ उन्हें ह्वाँगहो नदी के प्रदेश में ले आया। उसी ने उन्हें पेड़ों की शाखाओं से घर (झोपड़े) बनाना सिखाया। फिर भी चीनी लोग डेरों के जीवन को नहीं भूले। इस समय भी यदि ध्यान से देखा जाय तो चीनी घर डेरे के समान दिखाई देता है। चीनी लोग अपने राजाओं को बड़े आदर से देखते थे। वे चीनी साम्राज्य को स्वर्गीय साम्राज्य कहते थे। सचमुच आरम्भ के चीनी राजाओं ने परोपकार और सेवा का जीवन बिताया। उनसे चीनी लोगों को बड़ा लाभ हुआ। एक राजा (सुजिन या सुजन) ने दो लकड़ियों को रगड़ कर आग जलाना सिखाया। एक राजा (फूहे) ने लोहे की चीजों का बनाना सिखाया। चीनुङ्ग राजा ने हल जोतना सिखाया। एक

राजा ने कुतुबनुमा का पता लगाया और जंगल में उसकी सहायता से रास्ता ढूंढ़ लिया। ह्वांगहो (पीत-सम्राट) ने जहाज़ और सड़कें बनवाई। उसने वर्ष को महीनों और तिथियों में बांटा और पहला चीनी पंचाङ्ग बनाया। उसकी रानी सीलिंग ने रेशम तयार करना और कपड़े



चीनी मन्दिर



चीन का एक पण्डित

बनाना सिखाया। ह्वांग हो (पीली) नदी पुराने समय में भी अपनी बाढ़ से चीनियों को डुबाकर उनपर आपत्ति लाती थी इसी से यह नदी चीन का शोक कहलाती थी। यू राजा ने नदी की बाढ़ को रोकने और पानी को बहाने के लिये ९ वर्ष नहरों के खुदवाने में लगाये। लेकिन चे ह्वांगहो चीन का सब से बड़ा राजा गिना जाता है। उसने छोटे छोटे राजाओं को हरा कर चीन को एक बड़ा साम्राज्य बना दिया। वास्तव में वही चीन

का पहला सम्राट माना जाता है। उसके समय में उत्तर की ओर से जंगली तारतारी लोग चीन पर बार बार हमला करने लगे। उसने उन्हें कई लड़ाइयों में हराया और उनको रोकने के लिये चीन की बड़ी दीवार बनाई। साम्राज्य का ठीक ठीक प्रबन्ध करने के लिये उसने चीन को ३६ प्रान्तों में बांटा और प्रत्येक प्रान्त का शासन करने के लिये एक एक सूबेदार नियत किया। उनका काम देखने के लिये उसने दूर दूर के प्रान्तों की यात्रा की।

एक बार एक सभा में कुछ लोगों ने राजा से कहा कि पुस्तकों में लिखा है कि पुराने समय के राजा अधिक प्रतापी हो गये हैं। इस से सम्राट चिढ़ गया। उस ने आज्ञा दी कि कृषि, शिल्प, औषधि और ज्योतिष की पुस्तकों को छोड़कर समस्त पुरानी पुस्तकें जला दो। कुछ लोगों ने पुस्तकें छिपा दीं और सम्राट के मरने के बाद वे निकाली गईं। लेकिन जिन विद्वानों ने सम्राट की आज्ञा का उल्लङ्घन किया और पुरानी पुस्तकों को नहीं जलाया वे ज़िन्दा गाड़ दिये गये। कहा जाता है कि इस तरह ४६० विद्वान ज़िन्दा गाड़ दिये गये थे।

चीन देश में विद्वान का राजा से भी अधिक मान होता है। कुङ्ग-फुत्से (जिसे अंग्रेज़ी में कन्फ्यूशस कहते हैं) चीन का सब से बड़ा विद्वान गिना जाता है। फुत्से का अर्थ शिक्षक है। कुङ्ग उसके वंश का नाम है।

सचमुच इस महापुरुष ने ७३ वर्ष तक आदर्श शिक्षक का काम किया। उस का पिता एक प्रान्त का प्रधान मन्त्री था। लेकिन कुंगफुत्से के बचपन में ही वह मर गया था। इस लिये कुंगफुत्से की शिक्षा का भार उस की माता और प्रपिता (दादा) के ऊपर आया। अपनी विद्वत्ता के कारण वह इतना प्रसिद्ध हो गया था कि १७ वर्ष की उम्र में ही वह एक बड़ा सरकारी पदाधिकारी बनाया गया था। लेकिन विद्या-प्रेम के आगे मान और पद की परवाह न करके वह शिक्षक बना। घरेलू झंझट पढ़ने पढ़ाने में बाधा न डालें इसलिये एक लड़का पैदा होने के बाद उस ने अपनी स्त्री को भी छोड़ दिया। उसकी ख्याति बढ़ने से विद्यार्थियों की संख्या भी बढ़ने लगी। एक बार उसके पास ५००० विद्यार्थी पढ़ते थे। कुङ्ग-फुत्से छोटी छोटी बातों में भी अपने शिष्यों के लिये बड़े उपदेश भर देता था। एक बार कुङ्गफुत्से अपने शिष्यों के साथ एक खेत में होकर जा रहा था। रास्ते में उसे एक चिड़िया फंसाने वाला मिला। जाल में फंसी हुई चिड़ियों को देख कर कुङ्गफुत्से ने चिड़ीमार से पूछा "क्या कारण है कि जाल में कोई बड़ी चिड़िया फँसी हुई दिखाई नहीं देती है।" चिड़ीमार ने उत्तर दिया "बड़ी और बुड्ढी चिड़िया इतनी होशियार होती हैं कि वे जाल में नहीं फँस सकतीं। जो छोटी

चिड़ियां बड़ी चिड़ियों के साथ रहती हैं वे भी नहीं फँसती हैं। केवल छोटी चिड़ियाँ फँसती हैं जो अकेली रहती हैं या दूसरी छोटी चिड़ियों के साथ रहती हैं।" कुङ्गफुत्से ने विद्यार्थियों से कहा कि छोटी चिड़ियों को जाल में फँसने से बचने के लिये बड़ी चिड़ियों के साथ रहना चाहिये।

कुङ्गफुत्से ने ७३ वर्ष की अपनी सारी उम्र पढ़ने पढ़ाने और पुस्तकों को संग्रह करने में बिताई। उसने इतिहास, कर्मकांड, काव्य, ज्योतिष आदि कई विषयों पर ग्रन्थ लिखे हैं। चीन देश के असंख्य लोग उसकी लिखी हुई पुस्तकों को पढ़कर ही विद्वान हो गये हैं। उसके उपदेश सभी देशों के लिये शिक्षा से भरे हैं। उसके कुछ उपदेश ये हैं :—

"दूसरे के साथ वही व्यवहार करो जो तुम अपने लिये चाहते हो।"

"जो सत्य को जानकर उस पर नहीं चलता है वह बड़ा कायर है।"

"श्रेष्ठ पुरुष वचन देने में धीमा और आचरण करने में पक्का होता है"।

"जो तुम्हें हानि पहुँचावे उसपर दया करो।"

मुझे इसकी चिन्ता नहीं कि लोग मुझे जानें। मैं चाहता हूँ कि मैं जानने योग्य बनूं। श्रेष्ठ पुरुष धर्म का विचार रखते हैं। नीच पुरुष आराम का ध्यान रखते हैं।

कुङ्गफुत्से के समय में चीनी साम्राज्य में बहुत से छोटे छोटे राजा या सरदार थे। प्रत्येक राजा अपनी राजधानी में रहता था। राजधानी के बाहर बहुत से छोटे छोटे गांव थे। इन गांवों में किसान रहते थे। किसानों के पास छोटे छोटे खेत थे। चीनी किसान स्वाधीन और स्वावलम्बी थे। वे अपने खेतों में धान और तरह तरह की तरकारियां उगाते थे। फसल का दसवाँ भाग लगान के बदले राजा को मिलता था। जमीन का नवां भाग सारे गांव के लोगों की सम्मिलत जायदाद समझी जाती थी और खाली छोड़ दी जाती थी। इससे गरीब अमीर सभी लाभ उठा सकते थे। इसी तरह तालाबों और झीलों से गरीब लोग भी मछली पकड़ सकते थे।

चीन में सोने, चाँदी, ताँबे, सीसे और लोहे के सिक्के बहुत पुराने समय से चलते आ रहे हैं। इसी तरह तोलने का ढङ्ग भी वहां बहुत पुराना है। जो लोग खेती नहीं करते थे वे भेड़ बकरी पालने और कारीगरी का काम करते थे। बड़े लोग अवकाश के समय चीते और दूसरे जंगली जानवरों का शिकार करते थे। शिकार करने और लड़ने मे चीनी लोग धनुष बाण चलाते थ। शान्त प्रकृति के होने पर भी चीनी लोग निशाना लगाने में बड़े होशियार हो गये थे। चीनी लोग शिक्षा की ओर बड़ा ध्यान देते थे। लड़कों को पढ़ना-लिखना,

गणित और धर्मशास्त्र सिखाया जाता था। विद्यार्थियों को बड़ों की आज्ञा पालने और परिश्रम करने की आदत आरम्भ से ही पड़ जाती थी। स्कूल खोलने की रस्म बड़े समारोह के साथ होती थी। इसमें बड़े बड़े अफसर आते थे और व्याख्यान देते थे। चीनी लिपि बड़ी विलक्षण रही है। इसमें अक्षरों की संख्या बहुत है। लिखने का ढङ्ग कागज के नीचे से ऊपर और दाहिनी ओर से बाईं ओर को होता है। रेशम कातने और बुनने का काम चीन में रानी से लेकर भिखारिन तक सभी स्त्रियां किया करती थीं। गरीब अमीर सभी रेशम के कपड़े पहनते हैं। अमीरों के रेशमी कपड़ों पर सोने चांदी के तारों से बढ़िया किनारी और रंग साजी का काम रहता था। वे मोजे और दूसरे कपड़े भी पहनते थे। सोने के लिये भी रेशमी गद्दे रहते थे। गरीब आदमी भी चटाई के ऊपर तकिया रख लेता था। शहतूत के पेड़ राजा और रंक सभी लगाते थे। रेशम का एक त्योहार मनाया जाता था। चीन का रेशम इतना प्रसिद्ध हो गया था कि अब से ढाई हजार वर्ष पहले लाल सागर, फारस की खाड़ी, लंका, मालाबार और कारोमंडल (हिन्दुस्तान के पूर्वी और पश्चिमी तट) से हर साल व्यापारी जहाज़ चीन का रेशम और दूसरी चीज़ें खरीदने के लिये चीन के बन्दरगाहों में आते थे।

सुमेरियन, बेबिलोनियन और एसीरियन

सुमेरियन लोग फारस की खाड़ी के पास दजला और फरात की घाटियों में रहते थे। इनके देश में वर्षा बहुत कम होती थी इसलिये ये लोग कच्ची ईंटों को सुखा कर अपने देवताओं के मन्दिर और अपने घर बनाते थे। इनके राजा का महल भी इसी तरह की कच्ची ईंटों का बना था। इनका प्रधान नगर सुमेरू था। वर्षा की कमी होने से सुमेरियन लोगों ने अपने खेतों को सींचने के लिये बड़ी बड़ी नहरें बनाईं। ये लोग बड़ी बड़ी नावें बनाते और अधिकतर नदी के मार्ग से सामान भेजते थे।

सुमेरियन लोगों का देश उपजाऊ और समतल था। इसलिये इन्हें सदा शत्रुओं का डर लगा रहता था। एक बार कुछ जंगली और लड़ाका लोग अरब की ओर से आकर इनकी घाटी में घुस आये। इन नये लोगों ने नदी के ऊपर कच्चे घरों का एक नगर बसाया। इस नगर का नाम बाबुल (बेबिलान) था। बेबिलान एक बड़ा शक्तिशाली नगर हो गया। यहाँ बहुत से मन्दिर और महल बन गये। बेबिलान का एक राजा हामूराबी सुमेरिया देश पर चढ़ आया। उसने सुमेरिया को जीत लिया। नदी के दक्षिणी भाग (सुमेरिया) के

मिल जाने से बेबिलोनियन साम्राज्य बहुत बड़ा हो गया हामूराबी अच्छा राजा था। उसने अच्छे क़ानून बनाये। कुछ नियम उसने पत्थर पर खुदवा दिये। बेबिलान के लोगों ने सुमेरियन लोगों से लिखना सीख लिया। वे पहले कच्ची मिट्टी की टिकियों पर लिखते थे। फिर उनको वे पका लेते थे। इस प्रकार उन पर खुदे हुये अक्षर भी पक्के हो जाते थे। लेकिन इस ढंग से बड़ी बड़ी पुस्तकें नहीं लिखी जा सकती थीं। सुमेरियन लोग नुकीली कीलों से मिट्टी की टिकियों पर लिखते थे। इस लिये उनके अक्षर भी नोकदार होते थे।

हामूराबी ने अपने देश की खेती बढ़ाने के लिये नहरें खुदवाईं। इससे यहाँ गेहूँ बहुत पैदा होने लगा। सौदागर लोग इसी गेहूँ को मोल ले जाते थे और इसके बदले में तरह तरह की चीजें दे जाते थे। व्यापार बढ़ने से बेबिलान बहुत मालदार हो गया। बहुत सा व्यापार उर बन्दरगाह से होता था। उर नगर केल्डिया की सभ्यता का प्रधान नगर था और बेबिलान के दक्षिण में फारस की खाड़ी के किनारे पर बसा था। लेकिन दजला और फारस नदियाँ अपने साथ बहुत सी मिट्टी फारस की खाड़ी में तेजी से गिराने लगीं। इससे आज कल उस नगर के खंडहर खाड़ी से बहुत दूर हो गये हैं।

बेबिलोनियन लोग सूर्य चन्द्र और तारों की पूजा किया करते थे। वे सूर्य को सबसे बड़ा देवता मानते थे। उन्होंने ज्योतिष विद्या की ओर बड़ा ध्यान दिया और आकाश के नक़्शे बनाये। उन्हें दिन, महीनों और वर्षों का ज्ञान था। उन्होंने बहुत पुराने समय में धूप घड़ी बनाई। इससे सूर्य की सहायता से समय का ज्ञान हो जाता था।



एक प्राचीन बेबिलोनियन

बेबिलोनियन लोग बहुत समय तक शान्ति से रहे। लेकिन उनके देश के उत्तर में जंगली पहाड़ी देश था। दजला और फरात नदियाँ इसी ओर से निकल कर उनके देश में बहती थीं। इस ऊँचे पहाड़ी देश में बड़े लड़ाका लोग रहते थे। यह लोग एसीरियन या असुरियन कहलाते थे। इन्होंने दजला नदी के किनारे निनवा नाम का बड़ा सुन्दर और मज़बूत नगर बसाया। एसीरियन लोगों पर मध्य एशिया के जंगली लोगों ने कई बार हमला किया। बार बार लड़ने से वे बड़े बलवान और लड़ाका हो गये। उन्हें घोड़े भी मिल गये थे। वे इन घोड़ों पर चढ़ते थे और उन्हें रथ में भी जोतते थे।

इन्हीं एसीरियन लोगों ने बार बार बेबिलान पर हमला किया। बेबिलोनियन लोगों के पास घोड़े नहीं थे। वे लड़ाई में हार गये। इसलिये एसीरियन राजा ने बेबिलान का साम्राज्य भी अपने एसीरियन साम्राज्य में मिला लिया। इस तरह एसीरियन साम्राज्य बड़ा भारी साम्राज्य हो गया। अब निनवा नगर दुनिया में एक बड़ा धनी नगर हो गया। सौदागर लोग दूर दूर से अपना सामान यहां बेचने के लिये लाते थे। सिरिया, अरब और हिन्दुस्तान के व्यापारी यहाँ पहुँचते थे।

आगे चल कर एसीरियन लोगों ने भूमध्य सागर के किनारे वाले सिरिफ और पेलेस्टाइन देशों को भी जीत लिया। यहीं यहूदी लोग रहते थे। वे दो राज्यों में बँटे हुये थे। उत्तर की ओर रहने वाले १० कबीले इस्रायली राजा में शामिलथे। दक्षिण की ओर यरूशलम नगर के पड़ोस में रहने वाले दो कबीले जूड़ा राज्य में शामिल थे। एसीरियन लोगों से हार जाने के बाद यहूदी राज्य सदा के लिये नष्ट हो गया। बहुत से यहूदी लोग गुलाम बना लिये गये। एक एसीरियन राजा मिस्र देश की ओर बढ़ा और वहाँ भी राज्य करने लगा। एसीरियन सिपाही फौलाद की तलवार चलाते थे। कांसे की तलवार चलाने वाले मिस्री लोग इनका सामना न कर सके और हार गये।

एसीरियन साम्राज्य भी बहुत दिनों तक न रह सका। बेबिलोनियन लोग फिर उठ खड़े हुये। एसीरिया से पूर्व की ओर बसे हुये मीडिरा देश वालों ने भी बेबिलोनियन लोगों की सहायता की। इस तरह बेबिलान के प्रसिद्ध राजा नबूकद नजर ने फिर अपना साम्राज्य बहुत बड़ा बना लिया। उसने बेबिलान नगर को पहले से भी अधिक सुन्दर बना लिया। बहुत से मन्दिरों के सिवा यहां ऊँचे टीलों पर जगत्प्रसिद्ध लटकते हुये बगीचे लगाये गये। मन्दिरों का घेर तली में अधिक चौड़ा होता था। ऊपर की ओर पतला होता जाता था। इससे दूर से देखने पर वे बड़े स्तम्भ (बुर्ज) से मालूम होते थे।

बेबिलोनियन लोग वास्तव में मैदानी भाग के रहने वाले थे। वे अच्छा घर बनाते थे। कभी कभी वे घर को मामूली ईंधन से ढक कर और आग जला कर कुछ पक्का कर लेते थे। एसीरियन लोग पहाड़ी भाग के रहने वाले थे। उनका घर अधिकतर पत्थर से बनता था कुछ भाग में ईंट भी लगा ली जाती थीं। साधारण लोग एक मंज़िला घर में रहते थे। धनी लोग दो मंज़िला घर बनाते थे। ऊपर जाने के लिये ज़ीना रहता था। स्त्री और पुरुष के कमरे अलग अलग होते थे। दरवाज़े और छत पर सजावट रहती थी। अधिक धनी लोगों के दरवाज़ों पर पीतल, हाथीदांत और सोने का काम होता था।

घरों में बैठने के लिये बहुत ऊँचा स्टूल रहता था। बैठने वाले के पैरों को सहारा देने के लिये एक और छोटा स्टूल होता था। कुछ लोग कुर्सी भी रखते थे। लेटने के लिये सब लोग चटाई बिछाते थे। इसके ऊपर अधिक धनी लोग कालीन बिछाते थे। कपड़े बहुत कम पहने जाते थे। सिर को धूप से बचाने के लिये किनारीदार फेल्ट की टोपी पहनी जाती थी। मामूली लुंगी के ऊपर बिना बांह और बिना बटन वाला चोगा पहना जाता था जो एड़ी तक लटकता रहता था। चलने वाले की बाईं टांग दिखाई देती थी। चुस्त रहने के लिये कमर बन्द बांध लिया जाता था। सूती कपड़े सिन्धु कहलाते थे। वे हिन्दुस्तान से आते थे। पुजारी लोग हिन्दुस्तानी मलमल के ही कपड़े पहनते थे। वे बकरी की खाल को बहुत पवित्र मानते थे। इस लिये वे अन्धे के ऊपर बकरी की खाल अवश्य डाल लेते थे। सभी लोग सिर और डाढ़ी के लम्बे लम्बे बाल रखते थे।

बालकों के पढ़ने पढ़ाने के लिये अलग स्कूल न थे। लड़के को पढ़ाने का प्रबन्ध पिता करता था। इससे अलग खर्च नहीं होता था और लड़के को ठोस शिक्षा मिलती थी। उस समय के लोगों को ज्योतिष और दर्शनशास्त्र का अच्छा ज्ञान था। लेकिन भूगोल का उन्हें बहुत कम ज्ञान था। वे पृथिवी को नाव के आकार का मानते थे।

लेखक का बड़ा आदर होता था। राज दरबार, बाज़ार आदि वह सभी स्थानों में रहता था। वह लिखने के लिये मिट्टी की छोटी छोटी ईंटें या टिकिया साथ रखता था। इनको वह अक्सर भिगो कर रखता था। इन्हीं पर वह पत्थर, तांबे या पीतल की नुकीली कील या कलम से खुरच कर लिखता था। पकाने से उसकी लिखी हुई मिट्टी की किताबों को आग में जल जाने का कोई डर नहीं रहता था। पानी में भी वे बहुत कम बिगड़ती थीं। इसी से कई हज़ार वर्ष पहले की लिखी हुई पकी मिट्टी की किताबों के अक्षर अबतक साफ साफ पढ़े जा सकते हैं। इस तरह की किताबों को रखने और ले जाने में कठिनाई अवश्य पड़ती है।

फोनीशियन लोग

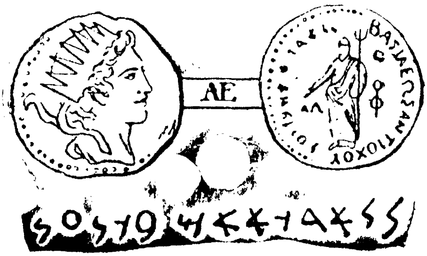
फोनीशियन लोग पुराने समय में बड़े समुद्री व्यापारी हो गये थे। पहले वे मेसोपोटामिया की फरात



फोनिशियन व्यापारी यूनानियों के हाथ अपना माल बेच रहे हैं।

नदी की घाटी में रहते थे। फिर वे वहां से चल कर भूमध्यसागर के किनारे आ बसे। उनका नया देश एक

ओर भूमध्यसागर और दूसरी ओर ऊँचे लेबनान पर्वत से घिरा हुआ था। यह देश बहुत कम चौड़ा था। इसमें पहाड़ियाँ और पथरीली घाटियाँ बहुत थीं। इस नये देश



फोनिशिया के पुराने सिक्के



फोनिशिया के दूसरे सिक्के। इनकी लिपि की देवनागरी से तुलना करो।

में खेती के योग्य बहुत कम ज़मीन थी। इसलिये फोनीशियन लोग यहाँ गेहूँ की खेती नहीं कर सकते थे। उन्हें खेती की जगह दूसरा काम ढूँढ़ना पड़ा।

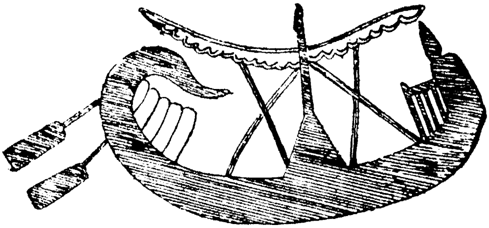
इनके भाग्य से लेबनान पहाड़ पर देवदारु के बड़े पेड़ उगते थे। इनके सामने समुद्र था। इसलिये इन्होंने





बिब्लस का मुद्रा

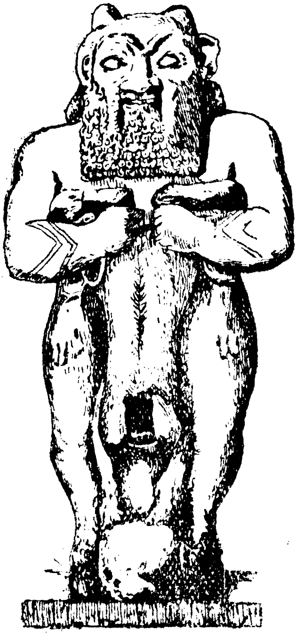
सफेद पत्थर की बनी सुराही और सोने का ढक्कन



फोनिशियन जहाज़

अपने नगर समुद्र के किनारे बसाये। पहाड़ों से देवदारु के लट्ठे लाकर इन्होंने अच्छे अच्छे लकड़ी के जहाज़

बनाये। जहाजों को ठहराने के लिये उन्होंने अपने नगरों के पास ही अच्छे बन्दरगाह तयार कर लिये। टायर और साइडन इनके दो सबसे बड़े नगर थे।



बाल सुर फोनिशियन लोगों के ग्रामदेव



अस्टरेट

लेकिन फोनिशियन लोगों का अधिकतर समय समुद्र के ऊपर यात्रा करने में बीतता था। इसलिये उनके नगर निनवा और बेबिलान की तरह आलीशान न हो सके। इनके पहले जहाज वास्तव में बड़ी बड़ी नावें थीं। वे

ऊपर से खुली हुई थीं। मल्लाह लोग नावों के किनारों के पास बैठकर उन्हें खेते थे। अगर हवा उसी तरफ

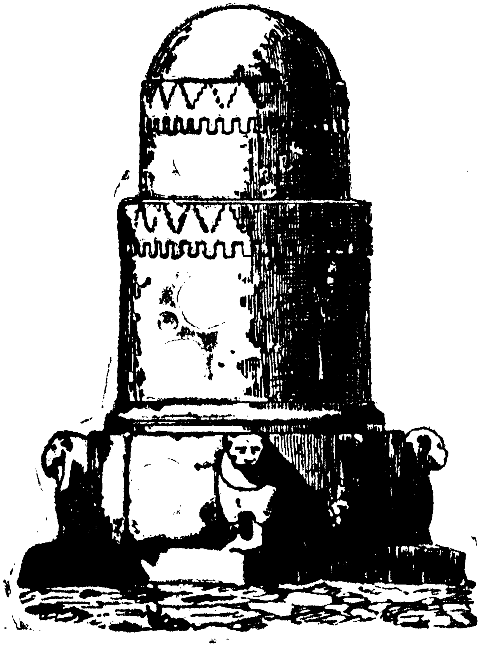


प्राचीन फोनिशिया की विचित्र चित्रकारी। इसमें मनुष्य, पशु और सिंह, बैल, हिरण आदि के कई प्रकार के चित्र हैं।

को चलती जिधर वे जाते थे तो वे हवा से लाभ उठाने के लिये चौकोर बादवान भी लगा लेते थे।

आगे चलकर फोनिशियन लोगों ने बड़ी अच्छी नावें

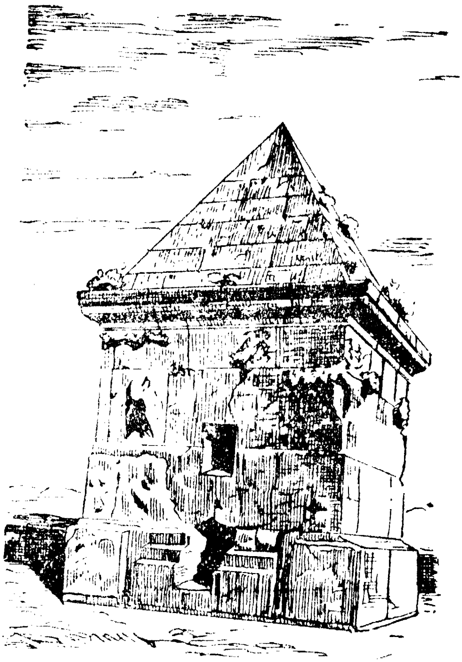
बनाईं। उनके ऊपर छत (डेक) होती थी। खेने वाले निचले भाग में बैठ कर खेते थे। डांड़ चलाने के लिये नावों के किनारों पर सूराख बना लिये जाते थे।



अमृत की समाधि

उन दिनों यहाँ के लोगों के पास कुतुबनुमा न था। इसलिए रात के समय नावों को खेने के लिये फोनीशियन लोग तारों को देखकर दिशाओं का पता लगाते थे वैसे वे प्रायः दिन के समय नाव चलाते थे और उन्हें तट के पास पास रखते थे। जब रात होती तो वे अपनी नावों

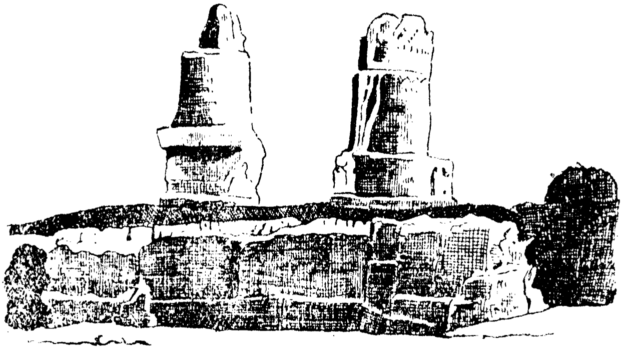
को किसी अच्छी जगह बांध देते थे। कभी कभी वे उन्हें ऊपर खींच लाते थे और बालू के ऊपर अपने डेरे डालते थे। इस तरह उन्होंने धीरे धीरे भूमध्यसागर



अमृत की एक दूसरी समाधि

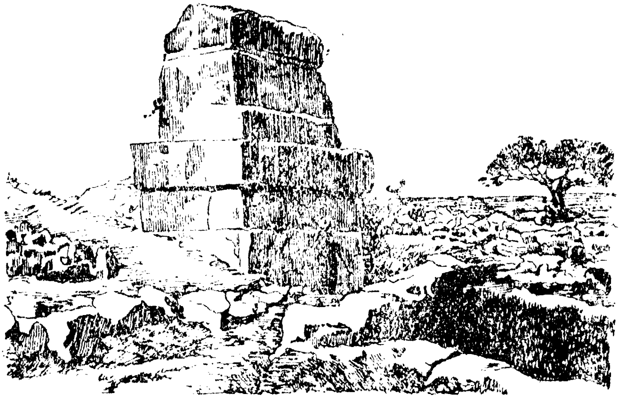
के सारे तट का पता लगा लिया। जगह जगह पर उन्होंने अपनी नावों को ठहराने के लिये बन्दरगाह बना लिये। अफ्रीका के उत्तरी तट पर उन्होंने कार्थेज नाम का बड़ा

अच्छा बन्दरगाह बनाया। आगे चलकर यह एक बहुत प्रसिद्ध शहर हो गया।

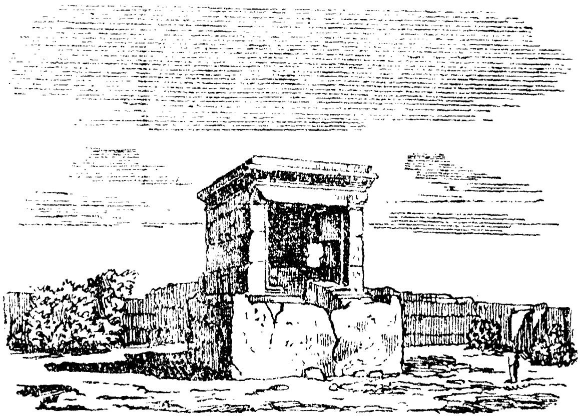


दो मेगाजिलों का एक दृश्य। प्राचीन फोनिशियन लोगों के बनाये हुये यह दोनों मक़बरे सिरिया की एक नीची पहाड़ी पर स्थित हैं।

भूमध्यसागर में क्रीट द्वीप के लोग भी अच्छे मल्लाह हो गये थे। उन पर यूनानियों ने हमला किया। इस समय फोनीशियन लोग इतने बलवान थे कि उन्होंने यूनानियों को मार भगाया। इसके बाद फोनीशियन लोगों की जहाज़ी शक्ति बहुत अधिक बढ़ गई। कुछ लोग पश्चिमी एशिया में पहुँचे। वे यहूदियों के मित्र बन गये। फोनीशियन राजा ने यहूदियों के राजा सुलेमान को यरुशलम नगर में ईश्वर का मन्दिर बनाने में बड़ी मदद दी। कहते हैं कि कुछ यहूदी और फोनी-

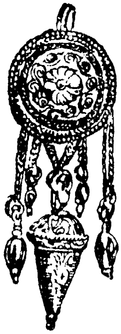


हारम की समाधि

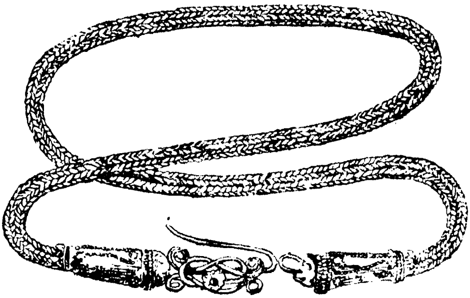


माराथस का एक मकबरा

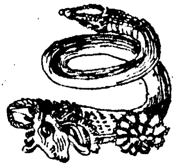
शियन लोग व्यापार की खोज में हिन्दुस्तान भी आये। इस ओर से लौटने वाले जहाज़ सोना, चाँदी, रत्न, बन्दर



सोने की बनी हुई कान की बाली



सोने का हार



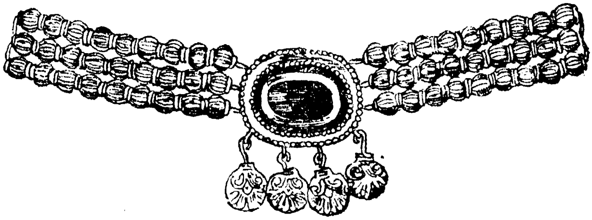
बाल कड़ा करने की अंगूठी



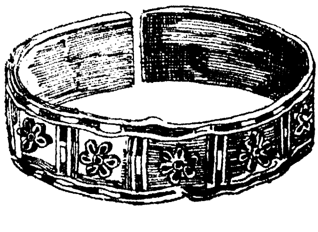
सोने का कड़ा

और मोरों से भरे हुये लौटते थे। कुछ जहाज पश्चिम की ओर बढ़े और ब्रिटेन में पहुँचे। यहाँ से वे टिन लाते थे।

उन्हें ब्यापार के काम में हिसाब किताब रखने के लिये लिखने पढ़ने की आवश्यकता जान पड़ी। उन्हें बेबिलान के नुकीले अक्षरों का कुछ ज्ञान था। इन्हीं से मिलते जुलते २२ अक्षरों से लिखना आरम्भ किया।



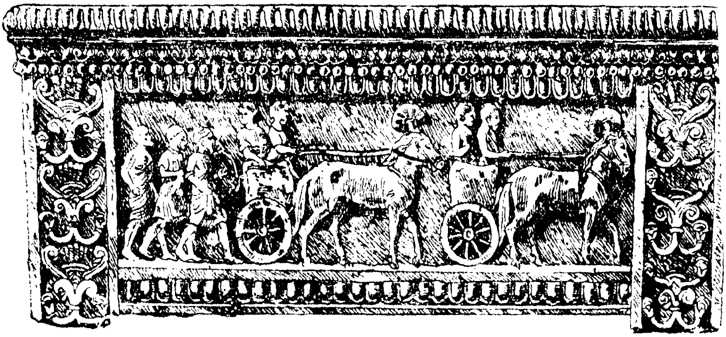
पहुँची



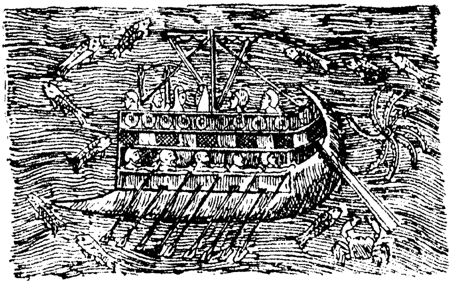
सोने की पहुँची

धीरे धीरे फोनीशियन लोग बड़े धनी हो गये। उनकी वीरता कम हो गई। बेबिलान के राजा नबूकद-नज़र ने इन पर हमला किया और उनकी शक्ति को नष्ट कर डाला। एसीरिया के बाद यहाँ ईरान और फिर

यूनान का राज्य हुआ। अन्त में फोनिशिया में रोमन साम्राज्य हो गया।



फोनिशियन लोगों की दीवार पर बनाई हुई चित्रकारी



नाव

फोनिशियन लोग बड़े होशियार कारीगर थे। वे तरह तरह के कपड़े बनाते थे और उन्हें बैंजनी रंग से रँगते थे। वे सोने-चाँदी के आभूषण और बर्तन बनाते

थे। शीशे की चीज़ें सीडन नगर में बनती थीं। वे लोहे और तांबे से भी बहुत सा सामान बनाते थे। बहुत सी चीज़ों का बनाना इन्होंने दूसरी जातियों से सीखा था। फोनीशियन लोग वृक्ष, पर्वत, नदी आदि प्रकृति से सम्बन्ध रखने वाले अनेक देवताओं की पूजा करते थे। पूजा करने के लिये वे मन्दिर बनाते थे। लेकिन उनके पूजा-स्थान हरे वृक्षों के नीचे और पहाड़ों की चोटियों पर होते थे।

ईरानी

बहुत पुराने समय में मध्य एशिया में रहने वाले कुछ ग्वालों और गड़रियों की दो जातियाँ ईरान में आ बसीं। इन जातियों के लोग मीडी और ईरानी कहलाते थे। ये लोग दजला नदी के पूर्व और फ़ारस की खाड़ी के उत्तर वाले ऊँचे पठार पर बसे थे। ये लोग आर्य थे। इनका रंग गोरा था। बेबिलोनिया के पीछे पहाड़ियों से घिरे हुये एक स्थान पर इन्हीं ने सूसा नाम का अपना प्रसिद्ध शहर बसाया। कुछ समय बाद मीडी और ईरानी लोगों के ऊपर एक राजा राज्य करने लगा। वे दोनों एक हो गये।

ईरानी लोग वीर सिपाही थे। उन्हें युद्ध बड़ा प्यारा था। ईरानी लड़कों को तीन बातें सब से पहले सिखाई जाती थीं। वे तीन बातें यह थीं—(१) घोड़े पर चढ़ना, (२) तीर कमान से सच्चा निशाना मारना और (३) सच बोलना।

पुराने पारसी (ईरानी) बम्बई में रहने वाले पारसियों के समान थे। उन दिनों में वहाँ इसलाम धर्म न था। वे जन्दा बस्ता को अपना धर्मग्रन्थ मानते थे। यह कुछ-कुछ अपने वेदों से मिलता था। जोरास्टर या ज़रदस्त इनका धर्माचार्य था। वे अग्नि को बड़ा पवित्र मानते थे

और उसे सदा जलाये रखते थे। उनका विश्वास था कि जो मनुष्य ईश्वर की इच्छानुसार काम करते हैं वे स्वर्ग को जाते हैं। जो भूत-पिशाच-या निन्दित आत्मा के कहने से पापाचरण करते हैं। वे नरकगामी होते हैं।

उस समय के रहने वालों को पारसी धर्म इतना अच्छा लगा कि न केवल ईरान वरन् पड़ोस के लोग भी इस धर्म को मानने लगे।

पुराने समय के पारसी बड़े वीर लड़ाका थे। उन्होंने अपने पड़ोस के देशों पर चढ़ाई की और उन्हें जीत लिया। पहले उन्हें असीरिया, पेलेस्टाइन और मिश्रिया को जीता। धीरे धीरे नील नदी और सिन्ध नदी के बीच वाले बड़े भाग पर उनका राज्य हो गया।

एकबार ईरान के राजा दारा ने यूनान पर चढ़ाई की। इस लड़ाई में दूर दूर के लोग उसे सहायता देने के लिये आये। इसमें कुछ हिन्दुस्तानी लोग भी शामिल थे। कहते हैं इतनी बड़ी सेना ने पहले कभी यूनान पर चढ़ाई नहीं की थी। एक हज़ार ईरान के चुने हुये घुड़सवारों के साथ एक हज़ार पक्के निशाने वाले धनुधारी थे। इनके पीछे १० हज़ार अमर सेना थी। यदि इस सेना के कुछ सिपाही मर जाते तो दूसरे सिपाही तुरन्त उनकी जगह पर आ जाते और अमर सेना की

संख्या कम नहीं होने पाती थी। साधारण सिपाहियों की संख्या और भी अधिक थी। इस सेना ने स्थल मार्ग से यूनान पर चढ़ाई की। रास्ते के तंग जल-संयोजक को नावों के पुल से पार किया गया। इस सेना का काम हलका करने के लिये कुछ जहाज़ भी भेजे गये। इस समय दारा मर चुका था। लड़ाई का भार उसके लड़के के ऊपर आया। दैवयोग से जहाज़ नष्ट हो गये। इससे चिन्तित होकर ईरानी लोग यूनान छोड़ कर अपने देश लौट आये।

इसके बाद ईरान देश कमज़ोर हो गया। यहाँ यूनानियों और दूसरे लोगों के लगातार हमले होने लगे और बड़ा ईरानी साम्राज्य सदा के लिये नष्ट हो गया।

पुराने ईरानी बड़े सभ्य थे। वे बहुत बढ़िया घर बनाते थे और पत्थरों को काट कर उनपर सुन्दर कारीगरी का काम करते थे। अधिकतर लोग घोड़े, भेड़, बकरी और दूसरे जानवर पालते थे। लेकिन बहुत से लोग खेती करने लगे और घर बना कर बस गये। वे पुराने समय में भी बढ़िया कालीन और दूसरे ऊनी कपड़े बुन लेते थे।

यूनानी

भूमध्यसागर के पूर्वी भाग के लोग पहले सभ्य बने। क्रीट के टापू में रहने वाले लोग मिस्री और दूसरे लोगों से अक्सर मिलने के कारण बहुत सी नई बातें सीख गये। कुछ समय बाद यही लोग ऊपर उत्तर की ओर यूनान के कटे फटे पहाड़ी देश में जा बसे। पहाड़ी



जगसन



यूनान का नेप्चून देवता



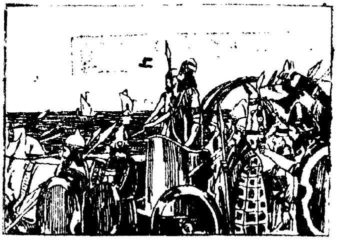
एक यूनानी देवता

देश में अलग अलग नदियों की घाटियों में बसे हुये लोग आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे। इनमें दो प्रधान थे। दक्षिण की ओर रहने वाले लोगों का प्रधान केन्द्र एथेन्स था। उत्तर के लोग स्पार्टन कहलाते थे। एथीनियन लोग बड़े संगीत-प्रेमी थे। लेकिन उनका गाना बजाना

धर्म से मिला हुआ था। वे एथीनी देवी को मानते थे। उसकी पूजा के लिये पहाड़ियों की चोटी पर उन्होंने बड़े-बड़े मन्दिर बनवाये। इन्हीं मन्दिरों के पड़ोस में दूसरे घर भी बने। इस तरह एथेन्स का बड़ा शहर बस गया। उपवास के दिनों मन्दिरों में सारे दिन धार्मिक नाटक होता था।



एथेन्स का आर्कोपालिस



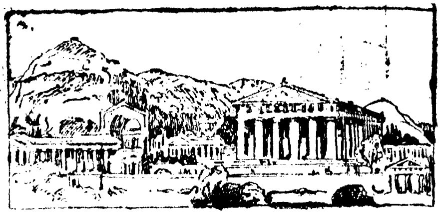
हेलन स्पान्ड को पार करना

आरम्भ में यूनानी लोग भेड़ बकरी और दूसरे जानवर पालते थे और घुमक्कड़ जीवन बिताते थे। फिर घाटियों में बस कर खेती करने लगे। पहले लोग लकड़ी के छोटे छोटे घर बनाते थे। फिर वे पत्थर के बड़े बड़े महल और मन्दिर बनाने लगे। कुछ लोगों ने देवताओं की बड़ी सुन्दर और विशाल मूर्तियाँ बनाईं।

पहले यूनानी लोग भेड़ की खाल के भद्दे कपड़े पहनते थे। फिर वे फोनिशियन लोगों से अच्छे कपड़े

मोल लेकर पहनने लगे। इन्हीं लोगों से यूनानियों ने लिखना सीखा। अलग अलग घाटियों में बसे हुये यूनानियों ने अपने अलग अलग शहर बसाये। प्रत्येक बड़े शहर का राजा अलग होता था। उनके देवता भी अलग होते थे। वे अक्सर एक दूसरे से लड़ते रहते थे।

यूनानी लोगों को तरह तरह के खेलों और कसरतों में बड़ा आनन्द आता था। खेल हर शहर में होते थे। लेकिन ओलम्पिया के खेल देखने के लिये यूनान के

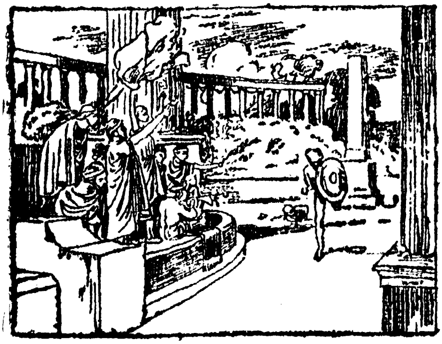


प्राचीन ओलम्पिया नगर। यहीं खेल खेले जाते थे।

सभी शहरों के लोग आते थे। इन खेलों से यूनान में भाईचारे का भाव बढ़ने लगा। साथ साथ खेलने वाले लोग एक दूसरे को भाई के समान समझने लगे।

ओलम्पिया के खेलों में जो विजयी होता था उसका बड़ा मान होता था। उसको मन्दिर के पास वाले पवित्र ज़ैतून की पत्तियों का हार पहनाया जाता। उसका, उसके पिता और शहर का नाम लेकर भीड़ के सामने उसकी विजय की घोषणा की जाती। इस प्रकार जब

विजयी अपने शहर को लौट कर आता तो सारा शहर विजय में अपना गर्व समझता और विजयी खिलाड़ी का बड़ा मान होता था।



ओलम्पिया की दौड़



यूनानी सरदार

स्पार्टा के लोग बड़ी कठिन कसरतें करके अपने शरीर को कठोर और बलवान बनाते थे। वे चोरी करने में अधिक अपमान नहीं समझते थे। लेकिन चोरी में पकड़ जाने से घोर अपमान समझते थे। एक बार एक

लड़के ने एक छोटी बिल्ली चुरा कर अपने कुरते के नीचे छिपा ली। बिल्ली उसका पेट काटने लगी। लेकिन पकड़े जाने के डर से लड़के ने न उफ़ की और न चेहरा बदला।


मेसीडोनिया का घुड़सवार


ग्रीक सैनिक

तरह तरह के खेलों से देश के नवयुवकों में बल और साहस बढ़ा। कुछ एकता फैली। ईरानियों के पीछे हट जाने से सारे यूनान में एक नया जोश फैला। इसके कुछ ही समय बाद यूनान के छोटे मेसीडान राज्य का एक लड़का बड़ा साहसी निकला। उसका नाम सिकन्दर था। जब वह बड़ा हुआ तो उसने सारे यूनान को एक कर दिया। फिर वह दूसरे देशों को जीतने के लिये बाहर निकला। टर्की, सिरिया, पेलेस्टाइन, मेसोपोटामिया, मिस्र, ईरान आदि कई देश जीत डाले। वह हिन्दुस्तान भी आया। लेकिन पंजाब के राजा पुरु

(पोरस) से लड़ने के बाद वह आगे न बढ़ा। वह फिर पीछे लौट गया।

सिकन्दर के मरने के बाद यूनान की शक्ति कम होने लगी। कुछ समय बाद यहाँ रोमन लोगों ने हमला किया और यूनानियों को हरा कर वहाँ अपना राज्य



ज़रज़क्स सैन्य का तीरन्दाज़ सवार



रथ

जमाया। लड़ाई में हार जाने पर भी यूनानी लोग बड़े सभ्य थे। वे तरह तरह की कारीगरी और विद्यायें जानते थे। उनके विजेताओं ने यूनानियों से बहुत सी बातें सीखीं। वास्तव में सारे योरुप का आदि गुरू यूनान देश है। बहुत से यूनानी व्यापार और विजय की खोज में दूसरे देशों में गये और वहीं बस गये।

रोमन

अब से लगभग २७०० वर्ष पहले योरुप के इटली देश में एमुलियस नाम का अत्याचारी राजा हुआ।



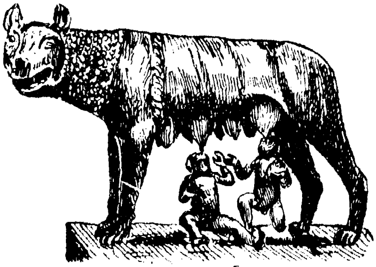
१—वीनस (स्नान के बाद)



जुपिटर (बृहस्पति)

उसका भाई राजा होने का अधिकारी था। लेकिन एमुलियस ने उसे मार भगाया और उसके इकलौते बेटे को मार डाला। उसके भाई की लड़की को उसने पुजारिन बनाया। उन दिनों इटली के पुजारी और पुजारिन व्याह नहीं करते थे। इस प्रकार किसी उत्तराधिकारी के

न रहने से वह निडर होकर राज्य करने लगा। लेकिन एक दिन उसे पता लगा कि मंगलदेव के गर्भ से पुजारिन



२

२—विख्यात मादा भेड़िया



३

३—नील और उसकी सहायक नदियाँ। रोमन लोग नदी को मनुष्य मानते थे।

राजकुमारी के एक साथ दो पुत्र पैदा हुए। एमुलियस ने राजकुमारी को मार डाला और बच्चों को टाइबर नदी में फेंकने की आज्ञा दी। जिस आदमी को बच्चों के फेंकने

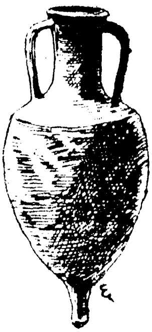
की आज्ञा दी गई थी वह दयावान था। उसने बच्चों को किनारे वाले उथले पानी में डाल दिया। शीघ्र ही वे टाइबर नदी के पानी से सूखी ज़मीन में हो गये। भूखे बच्चों



४—तांबे का बना हुआ भेड़िये का सिर



५—तांबे का बर्तन



६—एक पुराना मिट्टी का बर्तन



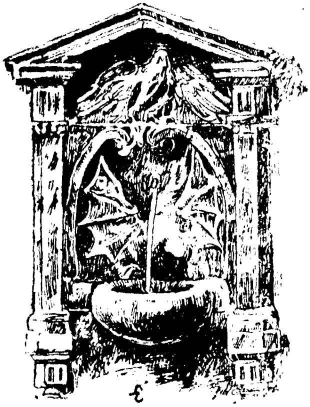
७—पात्र

का रोना सुन कर एक मादा भेड़िया उन्हें उठा ले गई। उसने उन्हें प्यार से रक्खा। कुछ समय बाद एक गड़रिया उन्हें छीन लाया और उसने उन्हें अपने बच्चों की तरह

पाला। बड़े होने पर इन लड़कों को पता लगा कि वे राजा के पौत्र (पुत्र के पुत्र) हैं। इन लड़कों ने गड़रियों को इकट्ठा किया और अत्याचारी राजा को हरा कर अपने दादा (पिता के पिता) को फिर राजा बनाया।



८—पुराना चाँदी का बर्तन

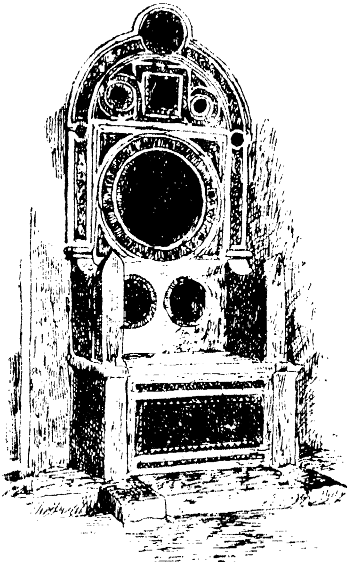


९—बोर्गो का फव्वारा

इन लड़कों का नाम रीमस और रोमुलस था। आगे चलकर इन्होंने सात पहाड़ियों के ऊपर रोम नगर को बसाया। शहर का स्थान चुनने में दोनों भाइयों में मतभेद हो गया और रीमस मार डाला गया।

रोम नगर तेज़ी से बढा। यहाँ के निवासी रोमन कहलाने लगे। रोमन लोगों का विश्वास था कि सदा शान्ति में रहने से मनुष्य आलसी और शिथिल हो जाते हैं। इसी से रोमन लोग अक्सर लड़ते रहते थे। लगातार

लड़ने से वे सचमुच बड़े योद्धा हो गये। उन्होंने योरुप, पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका का बहुत बड़ा भाग जीत लिया। इनके राजा (सम्राट) राजद्रोहियों को प्राणदण्ड देते थे। इस अपराध में ब्रूटस नाम के राजा ने अपने दो सगे लड़कों का भी सिर कटवाडाला।



१०

१०—आर्चा विशप का सिंहासन

सब रोमन लोगों को समान अधिकार न थे। रोमन पेट्रिशियन लोगों को अधिक अधिकार थे। प्लेबियन लोगों को उनके साथ लड़ाई में जाना पड़ता था। लेकिन उनको वेतन नहीं मिलना था। उन्हें टैक्स देने पड़ते

था। और कर्ज अदा न करने पर दंड भोगना पड़ता



११

११—एक संगीत मंडली



१२

१२—कालोशियम (प्राचीन भवन)

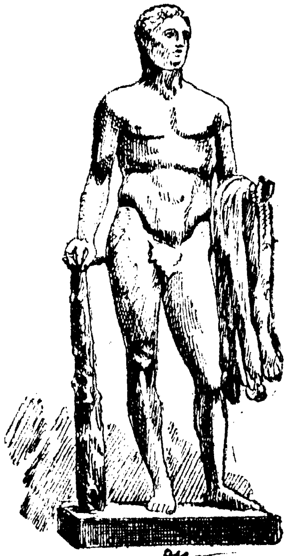
था। इन कारणों से प्लेबियन और पेट्रिशियन लोगों में खटपट रहती थी।

अहिंसा-विजय की एक घटना

अब से लगभग २३०० वर्ष पहले रोम में केइयस नामका एक वीर हुआ। उसका पिता बचपन में मर गया। उसकी माता ने उसे पाला पोसा। एक बार



१३—एपालो और डाफनी



१४—हरकुलीज़

उसने अपनी जान जोखों में डाल कर अपने साथी रोमन सिपाही की जान बचाई। इससे प्रसन्न होकर रोमन सेनापति ने उसे सिन्दूर-वृक्ष (ओक) की

पत्तियों का हार पहनाया। उन दिनों इस प्रकार के हार में बड़ा मान समझा जाता था।



१५

१५—एक सौदागर



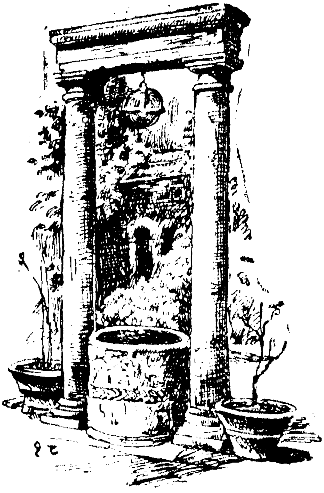
१७

१७—घुड़सवार



१६

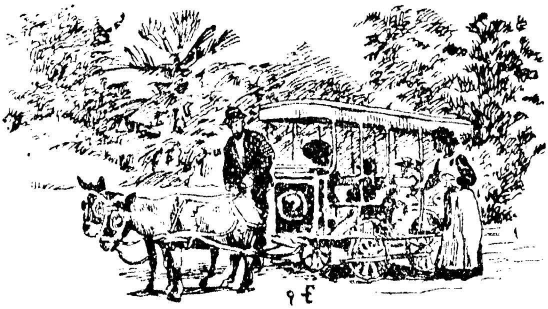
१६—नेप्चून देव



१८

१८—लेटरान का पुराना कुआं

आगे चलकर उसने बहुत ही लड़ाइयाँ जीतीं। एक बार उसने वोल्शियन लोगों को बुरी तरह से हराया और उनका पीछा करते करते अकेले उनके नगर में घुस गया। अकेला देख कर वोल्शियन लोगों ने उसे घेर लिया। लेकिन वह वीरता से लड़ता रहा। इतने में रोमन सिपाही नगर में आ गये। रोम की इस जीत से केइयस का बड़ा नाम हुआ।



१९—गधा गाड़ी

इसके बाद अकाल पड़ा। जन साधारण को अन्न से सहायता पहुँचाने के लिये रोमन राज-सभा में एक कानून पास हुआ। केइयस इसके विरुद्ध था। इससे जन साधारण बिगड़ खड़े हुये। केइयस रोम छोड़ कर अपने विरोधी वोल्शियन लोगों से जा मिला। वोल्शियन लोगों ने केइयस की सहायता से रोम पर फिर चढ़ाई की। रोमन सेना हारी। रोम को

बचाने का कोई उपाय दिखाई न दिया। स्त्री-पुरुष जुपिटर (बृहस्पति) के मन्दिर में प्रार्थना करने लगे। लेकिन पुजारियों से मिलने से केइयस ने इनकार कर दिया। फिर यह तय किया गया कि स्त्रियों की एक



२०—एक रोमन फायर मैन

मण्डली अन्तिम प्रार्थना करने के लिये केइयस के पास भेजी जावे। इसमें केइयस की माता, स्त्री और बच्चे भी सम्मिलत थे। माता को देख कर केइयस कुरसी छोड़-कर मिलने के लिये आगे बढ़ा। माता ने कहा हे पुत्र यदि तू मेरी मेरी कोख में न पैदा होता, तो रोम नगर नष्ट

होने से बच जाता। केइयस माता का अभिप्राय समझ गया। उसने कहा 'माता आज तेरी जीत है। रोम नगर नष्ट न किया जायगा। लेकिन मेरी हार है'। यह कह कर वह अपनी विजयी सेना रोम से हटा ले गया।

रोम के उत्तर में एट्रस्कन लोग रहते थे। ये लोग बड़े होशियार थे। ये लोग बहुत सी चीजें बनाना जानते थे। इनके पास कुछ अच्छे जहाज़ थे। रोमन लोगों ने इनसे बहुत कुछ सीखा। कुछ एट्रस्कन रोम के राजा हो हो गये।

लेकिन कुछ समय बाद रोमन लोगों ने एट्रस्कन राजाओं को भगा दिया और अपने में से दो सरदारों को शासक चुना। ये शासक कान्सुल कहलाते थे और एक वर्ष तक राज्य करते थे। इसके बाद फिर दो कान्सुल चुने जाते थे।

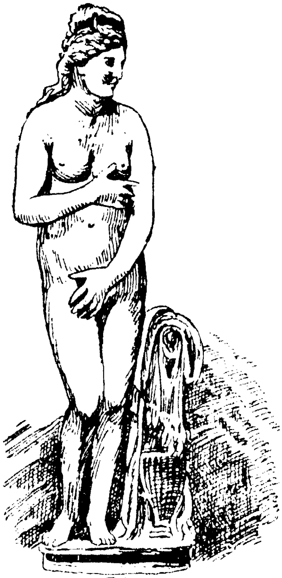
धीरे धीरे रोमन लोगों ने दक्षिणी योरुप, यूनान, मिस्र और फारस देश का कुछ भाग जीत लिया। इस समय की रोमन सेना पहले से भिन्न थी। पहले रोमन किसान लड़ाई लड़नें जाते थे और लड़ाई के बाद फिर अपने खेतों में काम करने के लिये लौट आते थे। इस समय जीते हुये देशों के लोग लड़ने के लिये नौकर रक्खे जाते थे। उन्हें वेतन मिलता था। रोमन लोग इनके ऊपर अफ्सर होते थे।

जीत कर लौटे हुये रोमन सेनापति का बड़ा मान होता था। वह एक सजे हुये रथ पर सवार होता था। जिसमें सफेद घोड़े जुतते थे। उसके सिपाही साथ साथ चलते थे। जिस खजाने को वह लूट कर लाता था वह आगे रहता था। जिन लोगों को वह गुलाम बनाकर लाता था वे हथकड़ी बेड़ी पहने हुये पीछे पीछे चलते थे। इन गुलामों को बेचने के लिये रोम नगर में एक स्थान पर बाज़ार लगता था। रोमन लोग उन गुलामों को मोल ले लेते थे। कभी कभी रोमन सेनापति आपस में लड़जाते। जो जीतता वह सारे रोमन साम्राज्य का निरंकुश राजा (तानाशाह) बनता।

एक बार कैसर (सीज़र) फ्रांस (गाल) और ब्रिटेन जीत कर रोम नगर में लौटा। इसी समय पाम्पी पेलेस्टाइन (यरूशलम) जीत कर लौटा। दोनों में लड़ाई हुई। कैसर जीत गया। इससे वह रोमन सम्राट बना।

रोमन लोगों ने योरुप के कई स्थानों में सुन्दर नगर, भवन, पुल और सड़कें बनाईं। उन्होंने कई अच्छे क़ानून भी बनाये। सम्राट अगस्टस ने रोम शहर को अपने में दुनिया भर में सबसे अधिक सुन्दर शहर बना दिया। उसने संगमरमर के मन्दिर, महल और सरोवर बनवाये। उसके समय में रोमन साम्राज्य में शान्ति रही। दूर दूर

देशों के सौदागर रोम नगर में व्यापार करने के लिये आने लगे। यहां मिश्र से गेहूँ, स्पेन से चांदी, ब्रिटेन से टीन, हिन्दुस्तान से हीरा जवाहिरात और चीन से रेशम आने लगा।



२१

२१ — वीनस (शुक्र)

अगस्टस के ही समय में ईसाई धर्म स्थापक ईसा रोम साम्राज्य के एक प्रान्त पेलेस्टाइन) में पैदा हुये लेकिन दूसरे सम्राट तबरिया (टाइब्रियस) के समय ईसा को शूली पर लटका दिया। आगे भी बहुत समय

तक रोमन लोग अपने पुराने देवताओं की पूजा करते रहे। लेकिन सम्राट कन्स्टेन्टाइन ईसाई धर्म को मानने लगा। इसके बाद रोमन साम्राज्य में यह नया धर्म तेज़ी से फैला। २०० वर्ष तक किसी तरह रोमन साम्राज्य बना रहा। इस बीच में रोमन लोग भोग विलास में फँस गये। वे अपना समय संगमरमर के सरोवरों, नाटक घरों, दावतों और नाच तमाशों में बिताने लगे। उधर ग़रीबों और ग़ुलामों को घोर कष्ट होने लगा। ब्रिटेन गाल (फ्राँस) और दूसरे प्रान्तों के रोमन गवर्नर स्वाधीन होने की कोशिश करने लगे। वे टाइर के बैंजने रंग की पोशाक भी पहनने लगे जो अब तक केवल रोमन सम्राट ही पहनते थे। ठीक इसी समय पूर्व की ओर से गाल नाम के जंगली लोगों ने रोमन साम्राज्य पर हमला किया। रोमन सैनिक दूर दूर से रोम को बचाने के लिये आये। जब रोमन गवर्नर ब्रिटेन को छोड़कर आने लगा तब ब्रिटेन के लोग उसी तरह से असहाय थे जैसे हम लोग निःशस्त्र होने के कारण आजकल असहाय हैं।

रोम सामाज्य नष्ट हो गगा। लेकिन रोम का पादरी ईसाई दुनिया में फिर भी सबसे बड़ा पादरी बना रहा। आज कल इटली के तानाशाह मसोलिनी उसी पुराने रोमन साम्राज को फिर से जिलाने की कोशिश कर रहे हैं।

११

नई दुनिया की पुरानी इन्का-जाति

प्राचीन इन्का लोगों ने प्राचीन रोमन और मिस्री लोगों की तरह एक बड़ा साम्राज्य बनाया। इनकी सभ्यता और इनकी कारीगरी इतनी बढ़ी चढ़ी थी कि कुछ विद्वान तर्क करने लगे कि मनुष्य जाति शायद दक्षिणी अमरीका में बसे हुये इन्का लोगों के पीरू देश से ही फैली। लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि पीरू देश के इन्का लोग बड़े पुराने हैं। इन्होंने एक बड़ा साम्राज्य बनाया। जिसको सोलहवीं सदी में स्पेन वालों ने नष्ट कर डाला।

यूकेटान में शिव जी के सिर के नीचे बैठी हुई बुद्ध भगवान की एक विशाल मूर्ति पत्थर पर खुदी हुई मिली। इससे अनुमान लगाया जाता है कि पीरू के प्राचीन पुरुष बौद्ध भिक्षु थे। पीरू के तीन देव कान, पचकामक और डरकोच हमारे हिन्दुस्तान के ब्रह्मा विष्णु और शिव से मिलते जुलते हैं। इन्का लोगों की सूर्य-कुमारियाँ दक्षिण भारत की देव दासियों के समान थीं।

इन्का लोग किचुवा भाषा बोलते थे। इस भाषा में लिखित साहित्य नहीं है। लेकिन नई दुनिया की अज़टेक और माया आदि कई जातियों का इतिहास बड़ा रोमांचकारी है। उनके रहन सहन से सिद्ध होता है कि वहां भी प्राचीन भारतीयों के उपनिवेश थे। केवल स्थानाभाव से उनका परिचय छोड़ दिया गया है। इस



६

इन्का लोगों के आदि पुरुष मांकोकापाक और उनकी धर्मपत्नी

भाषा के बहुत से शब्द संस्कृत से मिलते जुलते हैं। जैसे इन्ति और इन्द्र। इन्का लोग सूर्य भगवान की उपासना करते थे। साल में एक बार वे रयमी नाम का सूर्यो-त्सव मनाते थे। वे राम को सूर्यवंश मानते थे और सीतू (सीता) नाम का एक दूसरा उत्सव मनाते थे।

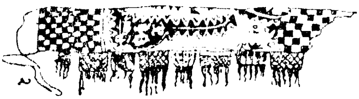
लेकिन इन लोगों के चेहरे और कई रीति रिवाज मंगोल और भोट (तिब्बती) लोगों की तरह हैं।

टिटीकाका झील के अड़ोस पड़ोस में पीरू के इन्का लोगों की प्रथम वस्तियां बसीं। यहीं उन्होंने कुज्को नाम का अपना प्रधान नगर बसाया। यहीं उनके राजा का महल बना।

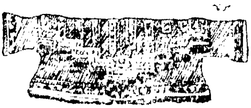
इन्का लोग अपना साम्राज्य बढ़ाने में जंगली लोगों को जान से नहीं मारते थे। न वे शत्रु की जायदाद नष्ट करते थे। उनका कहना था कि शत्रुओं की जायदाद को नष्ट करने से अपनी ही जायदाद नष्ट होती है। क्यों कि शीघ्र ही वे हमारे मित्र हो जांयगे। जहाँ इन्का लोग जाते थे वहां वे मितिमास नाम के ऊँचे आदर्श वाले इन्का लोगों को बसा देते थे। और जंगली लोगों को अपने नीचे बसा लेते थे। वे जंगली लोगों की मूर्तियों को भी लाकर कुज्कों के सूर्य मन्दिर में स्थापित कर देते थे। इस प्रकार इन्का लोग दूसरे लोगों से बहुत शीघ्र हिल मिल जाते थे।

इन्का-साम्राज्य चारों दिशाओं में फैला हुआ था इसी से चारों प्रान्त ताहुआन तिन्सुयु कहलाते थे। वे अन्ति सुयु (पूर्व) कुन्ती सुयु (पश्चिम) चिंच सुयु (उत्तर) और कोट्ट-सुयु(दक्षिण) थे। इन प्रान्तों के लोग राज दरबार के समय अलग अलग पोशाक पहन कर राज-

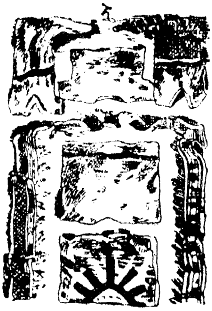
धानी में उपस्थित होते थे। भिन्न भिन्न उम्र के लोग भिन्न भिन्न काम में लगते थे। १६ से २० वर्ष के लड़कों को हलका काम दिया जाता था। वे कूक पल्लाक (कोका वृक्ष की पत्ती तोड़ने वाले) कहलाते थे। कोका यहां का बड़ा पवित्र वृक्ष समझा जाता था। हर संस्कार



पीरू देश के बने हुये पुराने सुन्दर वस्त्र



इन्का पांचा (बंडी)



पोंचो वस्त्र के कुछ नमूने

के समय पुजारी लोग आहुति आग में डालते थे। २० से २५ वर्ष की उम्र वाले यम-हान (बली) कहलाते थे। इससे अधिक उम्र वाले पूरिक (योग्य) कहलाते थे। वे कठिन से कठिन काम करते थे। अधिक उम्र वाले याम्पि (वृद्ध) कहलाते थे।

सेना का विभाग १० से सम्बन्ध रखता था। १० सिपाहियों के ऊपर एक नायक होता था। बढ़ते बढ़ते १०,००० हुनु सिपाहियों के ऊपर हातुन आपू या महासेनापति होता था।

राज दरबार में बड़ी शान रहती थी। यहां न केवल फौजी सिपाही बरन् कवि, ज्योतिषी, दर्शन-शास्त्री और दूसरे पदाधिकारी रहते थे।

इन्का सम्राट एक दम सफेद कुर्ता (मिर्जई) पहनता था। इसके किनारों पर रत्न जड़े रहते थे। यह बहुत छोटा होता था। इससे जंघों के सुनहले वस्त्र दिखाई देते रहते थे। राजा का मुकुट सोने का बना होता था। इसमें किनारों पर रत्न जड़े रहते थे। सामने अन्ति पूरि (सूर्य देव) की मूर्ति जड़ी रहती थी। ऊपर दक्षिणी अमरीका को राकेन्क (गिद्ध) पक्षी के दो पंख खुँसे रहते थे। इसके चारों ओर लाल साफा बँधा रहता था। कंधों पर गेरुआ रंग का ऊनी वस्त्र पड़ा रहता था। सम्राट पैरों में सुनहला चप्पल (जूता) पहनता था। विशेष अवसरों पर वह सोने का हार भी पहन लेता था। राजपरिवार के लोग पीली पोशाक पहनते थे। साधारण लोग नीली पोशाक पहनते थे। फौज की पोशाक अलग थी।

इन्का सम्राट केवल एक विवाहिता धर्म-पत्नी रखता था। लेकिन कोई कोई इन्का राजा कई सौ दासियां रख लेते थे। इसी से इनकी सन्तान भी अधिक बढ़ जाती थी। कुछ इन्का राजा ३००० से अधिक लड़के और लड़कियां छोड़ कर मरे। केवल धर्म पत्नी का ही

बड़ा लड़का राजा हो सकता था। दासियों के लड़के दूसरे मान के पदों पर नियुक्त होते थे। दासियां भी राज घराने की लड़कियां होती थीं। इन्हें मन्दिरों में धर्म पूर्वक शिक्षा दी जाती थी। ये वहां अग्नि प्रदीप्त रखती थीं।

राजा के प्रधान नियम पांच थे।

१—अमा किलां किचू (आलस्य मत करो)
२—अमा लूलां किचू (झूठ मत बोलो)
३—अमा स्वकुन किचू (चोरी मत करो)
४—अमा ह्वाचोक चुका किचू (व्यभिचार मत करो
५—(अमापिकतापस ह्वांचिंकचू) वध कत्ल मत करो

दंड पांच दिन के भीतर दिया जाता था। निरीक्षण कड़ा रहता था। इससे दंड न देने वाले पदाधिकारियों को दंड दिया जाता था।

विशेष पदाधिकारी प्रजा के हित को देखने के लिये रहते थे। वे शिल्प-कला की वृद्धि कराते रहते थे। सड़क पुल, नहर, कृषि की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। कृषि में कोका की फसल पर बड़ा ज़ोर दिया जाता था। कृषि (खेती) बड़े महत्व की समझी जाती थी। हर फसल के आरम्भ में इन्का राजा सोने के हल से कुज्को के पड़ोस में स्वयं कुछ ज़मीन जोतता था। पहाड़ी भाग में

ज़ीनेदार खेत थे। खेती के योग्य सभी ज़मीन जोती बोई जाती थी।

इन्का लोगों के घर और नहरें मज़बूत बलुआ पत्थर से बनाये जाते थे। पत्थर के टुकड़े इस होशियारी से रक्खे जाते थे कि वे बिना सीमेन्ट के ही जुड़ जाते थे। नहरों में पानी पहाड़ी झीलों से आता था। इन्का साम्राज्य में एक नियम (कानून) यह था कि हर एक प्रजा को कुछ न कुछ काम करना पड़ता था। इससे पीरू देश में कई तरह के पेशे हो गये और हर पेशे के लोग अपने काम में होशियार हो गये। पीरू देश में लोहा बहुत था। लेकिन इन्का लोग इससे काम नहीं लेते थे। वे तांबे और टीन को मिला कर कांसे के सामान से एक धातु तयार करते थे। इसी से वे भाला, फरसा आदि लड़ाई के हथियार और हथौड़ा आदि कारीगरी के औज़ार बनाते थे। सोने से वे तरह तरह के आभूषण बनाते थे। सोने की चादरों से ही सूर्य-मन्दिर सजाया जाता था। पूरे आकार की मूर्तियां भी सोने की बनती थीं। सोने के बारीक धागों से शाही पोशाक बनती थी पोशाक में सोने के बारीक धागों से पशु, पक्षी, फल फूल और पौधे ऐसी होशियारी से बनाये जाते थे कि वे ठोस सोने के मालूम होते थे। ऐसी ही कारीगरी मिट्टी के बर्तनों में चित्र बनाने में दिखलाई जाती थी। साधा-

रण कपड़े ऊन से बुने जाते थे। जो लोग कठिन काम नहीं कर सकते थे वे औषधियों और वनस्पतियों क इकट्ठा करते थे। वनस्पति-विज्ञान में इन्का लोग बड़े होशियार हो गये थे।

कोका की पत्तियां तोड़ने का काम स्त्रियों और बालकों से लिया जाता था। कातने और बुनने के काम में भी स्त्रियां बड़ी होशियार हो गई थीं। सिपाहियों से कारीगरी का काम नहीं लिया जाता था। शेष लोगों को अपनी कारीगरी का कुछ न कुछ सामान कर के रूप में सरकार को देना पड़ता था। यह सामान पुजारियों और सरकार में बट जाता था। शेष समय प्रजा अपनी आवश्यकता की चीज़ों के बनाने में लगाती थी। जिन प्रान्तों में अधिक अनाज होता था वहां से कुछ भाग उन प्रान्तों में भेज दिया जाता था जहां खानों से खनिज पदार्थ निकाले जाते थे। इस प्रकार देश भर में आवश्यकता की चीज़ें समान भाग से बट जाती थी और पैसे की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। जब स्पेन वालों ने यहां हमला किया और कुछ ज़िलों को हानि पहुँचाई उस समय भी इन्का अफसरों ने उन ज़िलों का नुकसान दूसरे जिलों पर बांट कर नुकसान को पूरा किया था। इन्का नियम के अनुसार हर पुरुष को इतनी जमीन मिलती थी कि वह उसमें मकई का सवा मन

बीज बो सके। इस उपज से सरकारी लगान भी निकल आता था और उसका खर्च भी पूरा हो जाता था। कोई पुरुष अपने कुटुम्ब और अपने खेत को नहीं छोड़ सकता था। इस प्रकार इन्का राज्य में बेकारी और भूखों मरने का सवाल नहीं उठता था। राजा सब की आवश्यकताओं को पूरा करता था। २४ वर्ष की उम्र में पुरुष को और १८ वर्ष की उम्र में स्त्री को विवाह करना अनिवार्य था। लेकिन विवाह इच्छानुसार और परिवार की सम्मति से होता था। विवाह वर्ष के नियत दिन होता था इसमें राजा का प्रतिनिधि भी उपस्थित होता था। वर को राज्य की ओर से अलग खेती के लिये ज़मीन मिलती थी। इसी प्रकार प्रत्येक बच्चे के पैदा होने पर भी राज्य की ओर से अलग जमीन मिलती थी।

इन्का सम्राट न केवल इस पृथ्वी का राजा वरन् ईश्वर का अंश समझा जाता था। वह सभी धार्मिक उत्सवों को नियत करता था। साल में एक बार अपनी दीनता प्रगट करने के लिये वह एक दम नंगा होकर ईश्वर से प्रार्थना करता था और कोका की पत्तियों का भेंट चढ़ाता था!

नियत अवसरों पर राजा अपने प्रान्तों का निरीक्षण करता था। ऐसे अवसरों पर सड़कों की विशेष सफाई होती थी। वह रत्नों से जड़े हुये सोने के सिंहासन पर

बैठ कर यात्रा करता था। सिंहासन को कंधों पर ढोने वालों का बड़ा मान होता था। लेकिन अगर ढोने वाले रास्ते में गिर पड़ते तो उनको प्राणदंड होता था।

इनका साम्राज्य में दो बड़ी सड़कें थीं। एक समुद्र-तट के पास जाती थी। दूसरी पहाड़ के ऊपर बनी थी। प्रत्येक सड़क प्रायः २२०० मील लम्बी और छः सात गज़ चौड़ी थी। थोड़ी थोड़ी दूर पर ठहरने और कोका की पत्तियों के रखने के घर बने थे। इन्हीं पर शाही हरकारे चला करते थे। वे थोड़ी थोड़ी दूर पर बदल जाते थे। पहला हरकारा अपना सन्देश देकर विश्राम करता था। दूसरा हरकारा सन्देश पाते ही पूरी चाल से चलता था। इस प्रकार एक दिन में औसत से १५० मील सन्देश भेजा जाता था। इसी ढंग से समुद्र तट पर पकड़ी हुई ताज़ी मछली दूसरे दिन ३०० मील की दूरी पर राजधानी में पहुँचा करती थीं। तट की सड़क के किनारों पर बालू रोकने के लिये दीवारें बनी थीं। पहाड़ी सड़क कहीं बरफ के ऊपर और कहीं सुरङ्ग के भीतर से जाती थी। पहाड़ी नदियों को पार करने के लिये मज़बूत रस्सों के पुल बने थे। इन सड़कों और पुलों के खंडहर देख कर आजकल के इञ्जीनियर दङ्ग रह जाते हैं।

इन्का लोगों को शायद अक्षरों का ज्ञान न था। लेकिन वे भिन्न भिन्न रङ्गों और गांठों से अक्षरों का काम

लेते थे। उदाहरण के लिये सफेद रंग से चाँदी, पीले से सोना और हरे से कोका का संकेत होता था। उनकी स्मरणशक्ति बड़ी तीव्र थी। सारा इतिहास इसी तरह दुहराया जाता था। हिसाब लगाने में भी वे बड़े होशियार थे।

इनका लोग संगीत के बड़े प्रेमी थे। इनका लोग सूर्य के उपासक थे। सूर्य मन्दिर में सूर्य भगवान के साथ बुध, शुक्र और दूसरे ग्रहों की भी पूजा होती थी। नाग पूजा (सर्प-पूजा) विशेष रूप से होती थी।

इन्का लोग अपने पूर्वजों का बड़ा आदर करते थे। मिस्र देश की तरह यहाँ के लोग भी लाश में मसाला लगाकर इसे सुरक्षित रखना जानते थे। वे अपने परिवार के बड़े लोगों की लाश को विशेष स्थान पर रखते थे। उत्सव के समय वे इसके सामने भोजन चढ़ाते थे। उनका विश्वास था कि मृतक की आत्मा विशेष अवसरों पर चढ़ाया हुआ भोजन ग्रहण करने आती है।

पीरू की यह प्राचीन जाति सोलहवीं सदी के मध्य तक बड़ी अच्छी दशा में रही। फिर आपस की फूट और स्पेन वालों के अत्याचार और लोभ से यह प्रायः मिटा दी गई। जो बचे वे ईसाई बना लिये गये और इनके प्राचीन इतिहास के साधन भी प्रायः मिटा दिये गये।

सम्पादकीय वक्तव्य

प्राचीन जीवन-दर्शन के साथ देश-दर्शन का दूसरा वर्ष आरम्भ होता है। प्रथम वर्ष हमारे लिये कड़ी परीक्षा का समय था। आर्थिक कठिनाई के कारण हम उतने अधिक चित्र नक़्शे और पृष्ठ पाठकों को भेंट न कर सके जैसा आरम्भ में मेरा विचार था। फिर भी ग्राहकों की उदार सहायता से एक विशाल साहित्यिक आयोजन आरम्भ हो गया।

इस वर्ष लड़ाई के कारण कागज़, छपाई आदि सभी चीज़ें महँगी हैं। हम देश-दर्शन का मूल्य बढ़ाना उचित नहीं समझते हैं। लेकिन हमें आशा है कि पाठक इस वर्ष देश-दर्शन को विशेष रूप से सहायता करेंगे।

यह अंक जुलाई के अंत में प्रकाशित होना चाहिये था। हमें खेद है कि इसमें देरी हो गई। भविष्य में देश दर्शन प्रति महीने के अंत में पाठकों की सेवा में भेजा जायगा।

आर्डर फार्म

ता०..........१९४०

मैनेजर—भूगोल-कार्यालय,

इलाहाबाद

महाशय जी,

कृपया नीचे लिखे सज्जनों का नाम भूगोल के स्थायी ग्राहकों की श्रेणी में लिख लें और इस वर्ष का प्रथम अंक वी० पी० से भेज कर वार्षिक मूल्य ३।) वसूल कर लें।

पूरा पता

(१) नाम..

पता..

(२) नाम..

पता..

(३) नाम..

पता..

(४) नाम..

पता..

आर्डर फार्म

ता०..........१९४०

मैनेजर—भूगोल-कार्यालय,
इलाहाबाद

महाशय जी,

कृपया नीचे लिखे सज्जनों का नाम देश-दर्शन के स्थायी ग्राहकों की श्रेणी में लिख लें और इस वर्ष का प्रथम अंक वी० पी० से भेज कर वार्षिक मूल्य ४।) वसूल कर लें।

पूरा पता

(१) नाम..

पता..

(२) नाम..

पता..

(३) नाम..

पता..

(४) नाम..

पता..